CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाकवि भासकृत

प्रतिज्ञा यौगन्धरायण

नाटक

अनुवादक

देवपुरस्कार विजेता

श्री हरदयालु सिंह

२००३

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम संस्करण १०००

मूल्य ।।।)

प्रकाशकीय

संस्कृत के श्रेष्ठ ग्रन्थों तथा पुराणों के हिन्दी अनुवाद की ओर सम्मेलन का ध्यान बहुत पहले से ही रहा है। इसके लिए पिछले चार वर्षों से एक स्थायी अनुवादक भी रखे गए हैं, जिन्होंने मत्स्यपुराण तथा वायुपुराण का अनुवाद समाप्त कर दिया है। सुप्रसिद्ध माघ कवि के शिशुपालवध तथा मम्मट के काव्यप्रकाश का अनुवाद भी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हो चुका है। संस्कृत के श्रेष्ठ नाटकों के अनुवाद की योजना भी सम्मेलन की दृष्टि में थी। श्री हरदयालु सिंह द्वारा अनूदित संस्कृत के सुप्रसिद्ध नाटककार भास के कर्णभार, दूतवाक्य, मध्यमव्यायोग, स्वप्नवासवदत्ता और प्रतिज्ञा यौगन्धरायण को सम्मेलन उसी दृष्टि से प्रकाशित कर रहा है। आशा है, हिन्दी पाठकों को वह पसन्द आएँगे।

श्रीमान् बड़ौदा नरेश स्वर्गीय महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने बम्बई के सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होकर जो पाँच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी, उसी सहायता से सम्मेलन इस 'सुलभ-साहित्य-माला' के प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इस माला में अनेक सुन्दर और मनोरम ग्रन्थ-पुष्पों का ग्रंथन हो चुका है और हमें आशा है कि उनके समान ही श्रीभास के नाटकों के इन अनुवादों का भी हिन्दी जगत् स्वागत करेगा।

साहित्य मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

सौर पौष २०, २००३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8122
B.Kr
444
8/01
Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Vidyapeetha ★ Bharatiya Vidya Bhavan
554

श्रीराधामाधवाभ्यामृनमः

महाकवि श्रीभास प्रणीतं

उदयन चरितं

प्रतिज्ञा यौगन्धरायण

मङ्गलाचरणम्

(नांदी के अनन्तर सूत्रधार का प्रवेश)

नूतन चन्द उदय समै की,
वर धौल छटान कौ धारन वारी।
आसव के तिमि सेवन सों,
अरसानि बढ़ी जिनमें अति भारी।
त्यों पद्मा के नजीक निवास सों,
पूरि रही रिधि सिद्धि हैं सारी।
साजें बसन्त सिंगारन त्रान,
करैं बलदेव की बाहु तुम्हारी ॥१॥

और भी—

महासेन तनबल विपुल, वासवसुखदातार।
वत्सराज वरशक्तिधर, रच्छहिं शम्भुकुमार ॥२॥

(१) बलदेव जी के दोनों बाहु जो वारुणी सेवन के कारण आलस्यपूर्ण हो रहे हैं; जिनमें नवीन चन्द्रभार समान छटा विद्यमान है, जो पद्मा (लक्ष्मी) के सानिध्य के कारण रिद्धिसिद्धि आदिकों से परिपूर्ण रहती है, तथा जो वसन्त शृङ्गार को धारण किये हुये हैं, तुम्हारी रक्षा करें। (मुद्रालंकार)

(२) इन्द्र को आनन्द देने वाले, वत्सराज स्वामिकार्तिक, महासेनापति, अपार शक्तिशाली, वत्सराज नाम से प्रख्यात, शक्ति ऐसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महादिव्यास्त्रों को धारण करने वाले शंकर के पुत्र तुम्हारी रक्षा करें। (मुद्रालंकार)

सूत्रधार—(घूमकर और नेपथ्य की ओर दृष्टिपात करके) आर्य्ये ! इस ओर पधारिये।

(नटी का प्रवेश)

नटी—आर्य्य ! दासी उपस्थित है।

सूत्रधार—आर्य्ये ! गीत आरम्भ करके तुम पहिले उपस्थित महानुभावों का मनोविनोद करो फिर मैं भी गाऊँ। अब शीघ्र ही अपना गायन आरम्भ करो इसमें संकल्प-विकल्प करने का कौनसा अवकाश है ?

नटी—आर्य्य ! क्या कहूँ। गत रात को मैंने एक बड़ा ही दुःस्वप्न देखा है वह यह है कि मेरे पिता के घर में कोई पुरुष रोग-ग्रस्त है। अब मैं चाहती हूँ कि वहाँ का कुशल वृत्त लेने के लिए किसी आदमी को भेज दूँ।

सूत्रधार—अवश्य, अवश्य।

अब ही चर भेजत उतहिं, मम हित सहसा जाय।

(नेपथ्य में)

(सालक तुम यात्रा के लिये सन्नद्ध हो जावो।)

सूत्रधार—ज्यों जुगन्धरायन रच्यो अपनो दूत पठाय ॥२॥

उसी प्रकार मैं ऐसे दूत को भेजूँगा जो मेरा काम बनाकर ही आवेगा जैसे। यौगन्धरायण किसी अन्य योधा को भेज रहा है।

(दोनों का प्रस्थान)

(यौगन्धरायण और सालक का प्रवेश)

यौगन्धरायण—सालक ! तुम यात्रा के लिये उपस्थित हो।

सालक—जैसी महाराज की आज्ञा हो।

यौगन्धरायण—तुम्हें बहुत दूर जाना है।

सालक—इससे मेरे उत्साह एवं साहस की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

यौगन्धरायण—अहह ! सहृदय सज्जन ही कठिन से कठिन कार्य को पूर्णतया सम्पादन करते हैं।

Sri Sankaracharya Mahavidyalaya Bharatiya Vidya 554

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो अत्यन्त दुष्कर कार्य्य हो उन्हें प्रेमियों को सौंपना चाहिये अथवा उन लोगों को भी सौंप देना चाहिये जो सौम्यगुणों के जानने वाले हों। जिसका सामर्थ्य मोल ले लिया गया है, उसका प्रयास क्रमशः दैवाधीन घटता बढ़ता रहता है।

कठिन कारज भार सौंपहु सदा सुहृदनि काहिं।
कै सकै जो सुजन के गुन गननि आपु सराहिं।
मोल कै बल लियो जो, तो पाय दैवसहाय।
देय काज बिगारि अथवा देय ताहि बनाय ॥३॥

अच्छा कल प्रभात ही तुम्हें वेणु वन के अन्तरगत ही वनत्रय से होकर नागवन को जाना ही होगा और इससे पहले कि महाराज आगे चलें तुम स्वयम् उनसे वहीं मिलना। महाराज उदयन की तुमसे वहीं भेंट होगी।

सालक—आर्य्य ! मैं तभी तक यहाँ ठहरा हूँ जब तक आप मुझे कोई प्रमाण पत्र नहीं देते। आप से पत्र पाते ही मेरी यात्रा अबाध हो जायगी। मेरी हार्दिक चेष्टा है कि आप सफल हों।

यौगन्धरायण—विजया ! विजया !

(विजया का प्रवेश)

विजया—महानुभाव ! दासी आ गई।

यौगन्धरायण—विजया ! अभी अन्तःपुर को जावो और वहाँ से पत्र और महाराज के लिये रक्षासूत्र भी ले आओ।

विजया—आर्य की जैसी आज्ञा हो। (प्रस्थान)

यौगन्धरायण—क्या तुम उस पन्थ से भी परिचित हो ?

सालक—मैंने तो उसका नाममात्र ही सुना है उससे परिचित नहीं हूँ।

यौगन्धरायण—(स्वगत) यह तो बड़ा ही तीव्र बुद्धि प्रतीत होता है। (प्रकट) क्या कहा जाय ? सुना गया है कि आरण्यक वारण-व्यूह के समूह में कृत्रिम नील गज का बनाकर प्रद्योत महाराज उदयन को प्रवंचित करने का प्रयास कर रहा है। मुझे भय है कि कहीं महाराज मतिभ्रम होने के कारण उसके जाल में न जा फँसें। बड़े कौतूहल की बात तो यह है कि महाराज उदयन से प्रद्योत भयभीत रहता है और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इससे सिद्ध होता है कि उसकी नाम मात्र की अक्षोहणी सेना वास्तव में निर्बल है।

यह तो स्पष्ट है कि उसके सेना बहुत है परन्तु वह भिन्न लक्ष्य है, और इने गिने वीर भी उसमें अनुरक्त नहीं हैं, इसीलिये युद्ध में छल-छद्म का आश्रय लेता है। क्योंकि सम्पूर्ण सेना अनुरागभाव से स्त्री के समान है ॥४॥

है महासेन की सैन अपार,
तऊ तेहि को कोऊ लच्छ है नाहीं।
थोरेई सैनिक वीर हैं पै,
घनो प्रेम महीपति सौं तिन्हैं नाहीं।
या लगि साजे सबै छल-छन्द,
लखी विजै आस जवै रन नाहीं।
नेह विहीन तिया सी सबै,
अनुराग अभाव सौं वीर लखाहीं ॥४॥

(विजया का प्रवेश)

विजया—लीजिये महाराज पत्र तो ले आई हूँ परन्तु रक्षा सूत्र को अभी सधवा स्त्रियों ने नहीं छुआ है इसलिये उसके आने में कुछ ही विलम्ब है।

यौगन्धरायण—विजया! तुम फिर अन्तःपुर को जाओ और महारानी से निवेदन करो कि रक्षा सूत्र को चाहे बहुत सी सधवायें छूयें चाहे एक ही छूये, परन्तु उसे लाओ शीघ्र।

विजया—आर्य जैसी आज्ञा हो। (प्रस्थान)

(निर्मुद्रक का प्रवेश)

निर्मुद्रक—आर्य! आपका कल्याण हो।

यौगन्धरायण—आपका आना कैसे हुआ?

निर्मुद्रक—आर्य! महाराज उदयन के पास से हंसक नाम का सन्देश वाहक आया है।

यौगन्धरायण—हंसक के एकाकी यहाँ आने का क्या अभिप्राय हो सकता है। सालक अब तुम अल्पकालिक विराम करके फिर जाना। परमात्मा जाने अब तुम्हें अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक जाना पड़े या निश्चिन्त होकर जाना पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सालक—आप जैसी आज्ञा दें। (बैठता है)

यौगन्धरायण—निर्मुद्रक ! हंसक को यहाँ भेजो।

निर्मुद्रक—महाराज ! जो आज्ञा। (प्रस्थान)

यौगन्धरायण—यों तो महाराज उदयन के साथ लोग सदा लगे रहते थे परन्तु आज सहसा इनके अचानक वन में चले जाने से मुझे बड़ी उद्विग्नता हो रही है। क्या किया जाय ?

जिस प्रकार विदेश से लौटकर आने पर पुरुष की बुद्धि इस बात के लिये शंकित रहती है कि मैं घर जाकर आत्मीय जनों के सम्बन्ध में प्रिय अथवा अप्रिय समाचार सुनूँगा, वैसे ही इस समय मेरी बुद्धि हो रही है ॥५॥

(हंसक और निर्मुद्रक का प्रवेश)

निर्मुद्रक—हंसक इधर आइये, इधर आइये।

हंसक—आमात्य-प्रवर कहाँ है ?

निर्मुद्रक—देखिये अमात्य-प्रवर तो यहीं बैठे हैं। आप उनके पास चले जाइये।

हंसक—(निकट जाकर) आर्य्य आपका कल्याण हो।

यौगन्धरायण—हंसक ! अभी महाराज नागवन को तो न पधारे होंगे।

हंसक—महाराज तो गत दिवस ही वहाँ चले गये थे।

यौगन्धरायण—शाक ! तब तो किसी चर को भेजना व्यर्थ है। हम लोग वंचित किये गये। महाराज की रक्षा की कोई आशा है या आज ही उन्हें अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ेगा ?

हंसक—आज अभी महाराज जीवित हैं।

यौगन्धरायण—जीवित हैं इससे तो यह ध्वनि निकलती है कि उनका जीवन संकट में नहीं है परन्तु मेरा अनुमान तो यह है कि महाराज निश्चय ही बन्दी बना लिये गये।

हंसक—आपका अनुमान सर्वथा यथार्थ है। महाराज वास्तव में बन्दी बना लिये गये।

यौगन्धरायण—महाराज कैसे शत्रुओं के जाल में जा फँसे ? भाग्य बल से ही प्रद्योत ने ऐसे दुर्धर्ष कार्य को सहसा सम्पादन कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिया। आज से यही भलीभाँति प्रमाणित हो गया कि महाराज उदयन के सचिवगण हतभागी और शक्ति रहित हैं। बड़े कौतूहल की बात तो यह है कि ऐसे दारुण व्यसन के उपस्थित होने के समय महामति रुमण्वान कहाँ था ?

बद्धानुराग, विशालकुलसम्भव, व्यायामशील, एवं गुणाकृष्ट प्रेमी जनों को क्या शत्रुओं ने प्रलोभन देकर स्ववश कर लिया या कानन की दुरूहता के कारण ही वे अदृष्ट हो गये, या घोर संग्राम करके सब के सब मारे गये ॥६॥

स्वामि सौं राखत नेह घनो,
स्ववंशहू के जे हुते उजियारे।
छीन्यो जिन्हें गुन देखि महीप,
अपार रहे तनु मैं बल धारे।
हाय सवार गये वै कहा,
अरि कै धन जाल फँसे कहाँ सारे ?
कै सबै कानन मैं उरझे,
रन खेत मैं कै लरिके गये मारे ॥६॥

हंसक—यदि सैनिक ही महाराज के साथ होते तो ऐसा दारुण व्यसन कदापि उपस्थित न होने पाता।

यौगन्धरायण—क्या कहा ! क्या महाराज के साथ उस समय समग्र वक्स वाहिनी न थी ?

हंसक—आर्य इसका वृतान्त सुनिये।

योगन्धरायण—अद्भुद खेद के कारण तुम परिश्रान्त मालूम होते हो इसलिये बैठ जाओ।

हंसक—आर्य्य की जो आज्ञा। (बैठकर) सुनिये। क्षीणप्रभ नक्षत्रों के उभयकालीन यात्रा कालोचित समय में बालुकातीर्थ से नर्मदा को पार करके महाराज ने वेणुवन में अपना शिविर डाल दिया और वारण व्यूह की मृगया के योग्य वाहिनी साथ लेकर हरिणों की विहारस्थली से होते हुये महाराज ने नागवन को पदार्पण किया। उस समय वह छत्र मात्र राजचिह्न धारण किये हुये थे।

यौगन्धरायण—अच्छा फिर क्या हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हंसक—उस समय भगवान भास्कर ज्यायुक्त नाराच इतने ऊँचे हो गये थे कि हम लोग इतनी ही दूर और चले गये। यहाँ से महगन्धी पर्वत एक कोस दूर पर रह गया था। यहाँ पर सरिता की चिकनी मृत्तिका से अर्ध निर्मित पाषाण के समान बना हुआ एक भयंकराकार वारण वृन्द दृष्टि गोचर हुआ—

यौगन्धरायण—फिर क्या हुआ ?

हंसक—उन्हें देखकर हमारी अग्रगामी सेना कुछ शंकाकुल हो ही रही थी कि अचानक समग्र आपत्तियों का मूल कारण एक सैनिक महाराज के निकट आया।

यौगन्धरायण—अच्छा उसने यही कहा होगा कि यहाँ से एक कोस दूरी पर मलिकाशाला छिन्न बन है वहाँ पर नगदन्त रहित नील-वर्णी मातंग को मैंने देखा है।

हंसक—आर्य्य ! आपको यह कैसे मालूम हुआ ? आपके समान महामति मंत्री के रहते हुये यह दारुण व्यसन व्यवस्था कैसे उपस्थित हुई ?

यौगन्धरायण—हंसक ! भवितव्यता के विरुद्ध ज्ञान कुछ काम नहीं देता। कहो फिर क्या हुआ।

हंसक—महाराज ने उस विश्वास घातक सैनिक को शत हेम-घंटु उपहार के स्वरूप भेंट किये और कहने लगे कि मैं जान गया इन्द्रीवर वर्णी मातंग चक्रवर्ती लक्षण से सम्पन्न होता है यह मैंने गज लक्षण में पढ़ रक्खा है इसलिये सैनिको ! तुम लोग शान्त भाव से थोड़ी देर के लिये यहीं ठहरो। मैं उस मातंग को अपनी घोषवती वीणा को सुनाकर ही अभी पकड़ लाता हूँ।

यौगन्धरायण—कुछ समझ में नहीं आता कि औरतों और अमात्य रुमण्वान ने महाराज की उपेक्षा क्यों नहीं की ?

हंसक—आर्य्य ! रुमण्वान ने महाराज को बहुत विनीत भाव से समझाकर कहा कि ऐरावत प्रभृति दिग्कुंजरों को पकड़ना आपके लिये शोभा नहीं देता और इस प्रकार एकाकी चल देने से प्रछन्न आपत्ति की आशंका की जा सकती है। पास ही निन्द कुरु दस्युओं का निवास भी है ऐसी दशा में उचित तो यह है कि वारण व्यूह को पदातियों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की संरक्षकता में छोड़कर हम लोगों को महाराज अपने साथ चलने की आज्ञा दें। दया करके आप वहाँ एकाकी जाने का विचार छोड़ दें।

यौगन्धरायण—रुमण्वान ने महाराज को महापुरुषोचित परामर्श दिया। ऐसी निर्मल राज भक्ति सर्वदा सराहनीय है। अच्छा फिर क्या हुआ ?

हंसक—तब तो महाराज ने रुमण्वान को अपनी शपथ दिलाई और स्वयं नील वलाहक हाथी से उतर कर पाटलाख्य अश्व पर आरूढ़ हुये और मध्य दिवस से पूर्व ही बीस वीरों को साथ लेकर महाराज ने आगे पदार्पण किया।

यौगन्धरायण—कदाचित् जीतने की अभिलाषा से आगे बढ़े होंगे परन्तु शोक है कि क्रीड़ा कौतूहल में पड़कर उन्हें पहिले की सारी बातें विस्मृत हो गई। अच्छा आगे कहो ?

हंसक—शीघ्र गति से चलते-चलते महाराज निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। वहाँ पर साल विटपों की सघन छाया के सदृश उसका भी नील वर्ण होने कारण वहाँ पर और कोई वस्तु तो दृष्टिगोचर हुई नहीं परन्तु सौ धनुष की दूरी पर से दो विशाल दाँत दिखाई पड़े जिससे इस बात का अनुमान होने लगा कि यह निर्दिष्ट वारण होगा।

यौगन्धरायण—हंसक वास्तव में वह वत्स निवासियों की दुर्भाग्यता की प्रतिमूर्ति था। इससे अधिक और क्या कहा जाय ? अच्छा फिर क्या हुआ ?

हंसक—फिर महाराज पाटलाख्य घोड़े से नीचे उतर आये और अपने इष्ट देव की बंदना करके उन्होंने घोषवती वीणा हाथ में ले ली। तत्काल भीषण सिंहनाद कर्णगोचर हुआ।

यौगन्धरायण—सिंहनाद का ! अच्छा आगे कहो !

हंसक—ज्यों ही हमारे सैनिक इस सिंहनाद का कारण जानने के लिये आगे बढ़े वैसे ही संख्यातीत योद्धाओं ने उस बनावटी हाथी से निकलकर हमें घेर लिया।

यौगन्धरायण—अच्छा फिर क्या हुआ ?

हंसक—फिर तो महाराज ने अपने सच्चे स्वामिभक्तों को आवाहन करके कहा कि यह सारा प्रपंच प्रद्योत का खड़ा किया हुआ है अतः तुम लोग मेरे पार्श्वरक्षक बने रहो और मैं अभी इन निःशंस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सैनिकों को इसी दुष्टता का दण्ड देता हूँ। मैं अकेले ही अपने बाहुबल से इनके आक्रमणों का निराकरण करूँगा। यह कहकर महाराज शत्रु व्यूह पर टूट पड़े।

यौगन्धरायण—महाराज शत्रुओं पर टूट ही पड़े। ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिये ?

शौर्य्यशाली स्वाभिमानी पुरुष लज्जित एवं प्रवञ्चित होकर इसके अतिरिक्त और कर ही क्या सकते हैं।

ह्वै वंचित लज्जित बहुरि, साहस पाय सहाय।
जो न घुसत अरि सैन में, करतो कहा उपाय ॥७॥

अच्छा फिर क्या हुआ ?

हंसक—उस समय स्वामी की इच्छा के अनुकूल चलने वाले पाटलाख्य अश्व पर महाराज सवार हुये और वैरियों का निर्दय संहार करना आरम्भ किया। हमारे अल्पसंख्यक सैनिक शत्रु की वृहतकाय विकट सेना से समस्त दिन लड़ते-लड़ते थक गये और अस्त्रघातों से छिन्नगात्र होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उस सेना में मन्दभाग मैं ही बचा हूँ। महाराज के अश्व के इतने घाव लगे थे कि वह भी संध्या के समय पृथ्वी पर गिरकर सदा के लिये सो गया और स्तवन बेला के समय महाराज भी संज्ञाहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

यौगन्धरायण—शोक ! बड़ा अनर्थ हुआ महाराज भी संज्ञाहीन होगये अच्छा कहो फिर आगे क्या हुआ ?

हंसक—तब तो अज्ञात नाम सुदृढ़लता पंक्तियों से उन दुरात्माओं ने महाराज को सामान्य बन्दी के समान बड़ी निर्दयतापूर्वक बाँध दिया।

यौगन्धरायण—हाय ! महाराज को बन्दी बनाते समय उनके हृदय में करुणा का संचार तक न हुआ:—

पीनस्कन्ध, गजेन्द्र शुण्डाकार वाणारोपण में कुशल, धनुष को खींचनेवाले, ब्राह्मणों के चरणस्पर्श से पवित्र अपने बन्धु वर्गों के सत्कार करने के कारण यशस्वी महाराज के दोनों हाथों में हेमवलय के स्थान पर हथकड़ियाँ डाल दी गईं।

वृष सम पीवर कंध, भुजा करिकर समदोऊ,
रहे कुशलता सहित धनुष सर जोरत जोऊ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेंटत हितुन उमाहिं नितहि द्विजगन सतकारत,
तिनमें बन्धन पर्यो जहाँ कंकन न पधारत ॥८॥

अच्छा तो फिर स्वामी की मूर्छा कितनी देर बाद व्यतीत हुई।

हंसक—आर्य! जब वे दुष्ट, स्वामी को बाँध चुके तब क्रमशः उन्हें चैतन्य लाभ हुआ।

यौगन्धरायण—सौभाग्यवश वह महाराज के पंचभौतिक कलेवर को बाँधने में भले ही सफल हुये हों परन्तु वे उनकी कीर्तिलता को न बाँध सके (जब तक वह पूर्ण रूप से संज्ञाहीन न हो सके तब तक कोई उनको हाथ भी नहीं लगा सका)

हंसक—जब महाराज को चेतना लाभ हुआ तब वे दुरात्मन् शत्रु सैनिक कहने लगे कि इसने मेरे बन्धुओं का वध किया है, इसने मेरे जनक का नाश किया है, इसने मेरे पुत्र का घात किया है और इसने हमारे मित्र को यमपुरी का अतिथि बनाया है। इस प्रकार कहकर वे महाराज पर झपट पड़े।

यौगन्धरायण—कहो फिर क्या हुआ ?

हंसक—फिर तो विचित्र घटना हुई। उनमें से एक हृदयहीन सैनिक क्रूरता को चरमसीमा तक पहुँचाने के लिये उठ पड़ा। उस समय महाराज चित्त पड़े हुये थे। उसने उन्हें उलट दिया और उनके विकीर्ण एवं रुक्ष चिकुर निकरको पकड़ अत्यन्त निष्ठुरता पूर्वक बध करने को तैयार हुआ।

यौगन्धरायण—हंसक! बस, बस मुझे विराम लेने दो।

हंसक—(कुछ ठहरकर) तब शोणिताकीर्ण चिकनी पृथ्वी पर वह स्वयं फिर कर गिर पड़ा उसके इतनी चोट लगी कि वह तत्काल ही मर गया।

यौगन्धरायण (सानन्द) अच्छा वह दुष्ट मृत्यु को प्राप्त हुआ बड़ा अच्छा हुआ।

जो नहि अरिपद सौं दलित, संकट धर्म विहीन,
निज भरतहि रच्छति मही, तेहि लखि सब विधि दीन ॥९॥

स्वयं वह सुरक्षित पृथ्वी ही विपन्न नरेश्वर की रक्षा करती है जिस पर राक्षसी धर्मसंकट नहीं पड़ने पाता और न शत्रु का आक्रमण होने पाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हंसक—उसी समय मूर्छा विगत शालंकायन नामक महाराज के एक मुख्य मंत्री ने उसको निवारण करते हुए कहा कि ऐसा न करना। यह शालंकायन महाराज के कुन्तल प्रहार से मूर्छित हुआ था।

यौगन्धरायण—अच्छा कहो फिर क्या हुआ ?

हंसक—तब ऐसी दशा में महाराज की वृति के प्रति अपूर्व प्रतिष्ठा प्रदर्शित करते हुए उसने इनके बन्धन खोल दिये।

यौगन्धरायण—महाराज को बन्धन मुक्त कर दिया ! धन्य शालंकायन ! धन्य समय ! तू वैरियों में भी सुहृदय भाव उत्पन्न कर देता है। हंसक ! मेरा शोकवेग प्रशान्त हो गया। तो उस आदरास्पद शालंकायन ने और क्या किया ?

हंसक—तब उस पूज्यवर ने बहुत से श्रद्धास्पद वचन कहे और यद्यपि उसका सारा शरीर व्रणांकित होने के कारण निर्बल हो रहा था तथापि उसने महाराज को अपने स्कंध पर उठाकर शिविका में लिटा दिया और इस प्रकार उन्हें उज्जैन को ले चला।

यौगन्धरायण—स्वामी का उज्जयिनी ले जाना ही बड़ा अनर्थ हुआ:—

प्रद्योत का यह संकल्प तो स्वामी को पहिले ही से ज्ञात था, अब महाराज को स्वाभिमानिता के कारण विशेष रूप से कष्ट होता होगा।

यह अभिलाष प्रदोत को, हम सब को धिक्कार।
संकट मैं भूपति पर्‌यौ लहि निज शौर्य्य अपार ॥१०॥

और भी,

हमारे सिद्धवाक्य महाराज उदयन उस प्रद्योत से कैसे मिलेंगे और उसके अविनीत वाक्य कैसे सहेंगे ? अविषय बन्ध्य क्रोध को वह कैसे रोकेंगे ? वास्तविक बात यह है कि विजित पुरुष चाहे सत्कृत हो अथवा बद्ध हो उसे तो झुकना ही पड़ता है ॥११॥

देखिहैं कैसे प्रदोतहि भूप,
गन्यौ जेहि कौ तिनहू कबौ नाहीं।
है सतभाषी कहौ केहि भांति,
भला सहिहैं कटु बैननि काहीं।
कोपहिं कापै दिखाइ हैं आय,
औ देखनहार है कौन तहाँही।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बन्दिहि ह्वै वे विनीत पर,
अपमाननि मैं अरमाननि माँही।

प्रतिहारी—आर्य ! लीजिये मैं यह रक्षा सूत्र ले आई।

यौगन्धरायण—भाग्य क्षय के कारण समय पर हमारे सारे प्रयत्न व्यर्थ हुए। रण के निवृत होने पर अश्व की वीराजन (पूजा-अर्च्चा) इत्यादि भी एक कौतुक जनक बात है ॥१२॥

प्रतिहारी—आर्य ! देखिये यह रक्षा सूत्र है।

यौगन्धरायण—विजया अब इसे ले जाओ। इसकी कौन सी आवश्यकता रह गई ?

प्रतिहारी—सो कैसे ! मैं राजमाता को क्या उत्तर दूँगी ?

यौगन्धरायण—क्या बताऊँ कुछ समझ में नहीं आता ?

प्रतिहारी—यह आप क्या कहते हैं ?

यौगन्धरायण—क्या बताऊँ ?

प्रतिहारी—नहीं महाराज नहीं, आप अभी कहें।

यौगन्धरायण—नहीं इसे गुप्त भी नहीं रख सकता क्योंकि राजमाता के सामने निवेदन करना ही पड़ेगा। इसलिये विजया तू इसे दत्तचित्त होकर धैर्य पूर्वक सुन।

यौगन्धरायण—(कान में) बात यह है।

प्रतिहारी—अरे यह बात !

यौगन्धरायण—अवश्य मेरा कथन अक्षरशः ठीक है।

प्रतिहारी—मुझ मन्दभागिनी को ही राजमाता के पास समझाने जाना पड़ेगा।

यौगन्धरायण—विजया ! महारानी से कहीं जाते-जाते अचानक यह न कह बैठना कि महाराज बन्दी बना लिये गये। क्योंकि उनका हृदय बड़ा ही स्नेह-कातर है उसकी रक्षा करना भी आवश्यक है।

प्रतिहारी—फिर जैसा आर्य कहें वैसा निवेदन करूँ।

यौगन्धरायण—देख,

पहिले युद्ध सम्बन्धी दोषों का उद्घाटन करना, फिर शंका की भावना का प्रस्ताव करना, जब अर्थ संदिग्ध हो जाये और विनाश की चिन्ता होने लगे, तथा शोक उत्पन्न हो जाये तब यथार्थ बात कहना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहिले नृप मातु हिये मैं सुनौ,
सहसा रन दोषनि कौ उपजाइयो।
बतियानि बनाय कै या विधि सौं,
बहु भांतिन संकित ताहि बनाइयो।
जबै सोचै बिनास लगै सुत के,
अपने मन में तेहि यों लखिपाइयो।
अरि हाथ में भूपति के परिबे की,
तबै चरचा तुम वाम चलाइयो॥

प्रतिहारी—अच्छा अब समझी।

(प्रस्थान)

यौगन्धरायण—हंसक! उस अवसर पर तुम्हीं महाराज के साथ क्यों न हो लिये।

हंसक—आर्य! जब मैं महाराज के साथ जाने को तैयार हुआ तो सालंकायन कहने लगा कि महाराज के साथ चलने में कोई लाभ नहीं, इसलिये तुम्हें मुक्त किये देता हूँ। तुम कौशाम्बी जाकर महाराज के बन्दी बनाये जाने का समाचार वहाँ सुनाओ।

यौगन्धरायण—(स्वगत) इसकी चाल कुछ समझ में नहीं आती। उसने सोचा होगा यदि हम महाराज को बन्दी बना लेंगे तो निश्चय प्रजावर्ग की निराशता का कोई अन्त न रहेगा। यह भी हो सकता है कि इसे महाराज को बन्दी बनाने की इच्छा भी हो। अथवा स्वामी भृत्य का आदर्श उपस्थित करने के भाव से प्रेरित होकर ऐसा किया होगा। या वह उनकी इच्छा से ही वहाँ से हटा दिया गया हो।

हंसक—आर्य! आप क्या विचार कर रहे हैं?

यौगन्धरायण—(पूर्ववत्) यह भी हो सकता है कि महाराज ने अपने विजय के अभिमान में आकर सफलता सूचक समाचार भेजा हो। फिर उद्योगारम्भ में ही कार्य की सफलता का लक्षण दिखाई पड़ने से मनुष्य का साहस बढ़ जाता है। (प्रकट, हंसक से) भला यह तो बतलाओ कि क्या महाराज ने मुझे संकेत करके कुछ कहा था?

हंसक—मन्त्रिवर! अवश्य कहा था। जब मैं महाराज की परिक्रमा करके चलने को तैयार हुआ था तब वह कहना तो बहुत कुछ चाहते थे परन्तु उनका दुखावेग इतना बढ़ गया कि गला भर आने के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कारण वे कुछ कह ही न सके और इतना कहकर रह गये कि ।आओ यौगन्ध, (कुछ ठहर कर)।

यौगन्धरायण—स्पष्ट बोलो, क्या तुम वही बातें कह रहे हो जो महाराज ने कही थीं ?

हंसक—जाकर यौगन्धरायण से कहो ।

यौगन्धरायण—अच्छा मुझे इस बात का भरोसा नहीं होता कि अन्य समस्त मन्त्रियों को छोड़कर उन्होंने एक मात्र यौगन्धरायण से मिलने का आदेश दिया हो ।

हंसक—इसमें आप को संदेह का कौन सा प्रसंग दिखाई पड़ता है ?

यौगन्धरायण—बात यह है कि अद्यावधि मैंने किसी प्रकार के विपत्ति-प्रतिकार कार्य में भाग नहीं लिया न मैंने महाराज के उपकार का बदला दिया और न मैंने राज सम्मान पाने के बदले किसी प्रकार का प्रत्युपकार ही प्रस्तुत किया तो भी महाराज ने मुझे क्यों इस कार्य के योग्य समझा है ?

हंसक—नहीं मन्त्रिवर ! आपको चिन्ता न रखनी चाहिये । महाराज को आप पर पूर्ण विश्वास है ।

यौगन्धरायण—यदि ऐसा ही है तो महाराज को मैं एक अपूर्व रूप में दृष्टिगोचर हूँगा ।

रिपु के पुर में, वन बन्धन में,
बदले वपु मों कह नाथ निहारि हैं ।
विपदा में, किधौं तनु कौ तजि कै,
सुरधाम में मो दिसि दीठि कौ डारि हैं ।
नृप जीतन की हिये साध जिन्हें,
वै प्रदोत जबै छल छन्द सौं हारि हैं ।
महिपाल सराहिहैं मोहिं तबै,
निज राजसिंहासन पै पग धारिहैं ॥१४॥

शत्रु नरेश्वर के नगर में, बन्धन में, या बन में ही अथवा अपना प्राण परित्याग करके या स्वयं बन्धन में आकर, तथा जिस राजा को इस बात का अभिमान है कि विजयी मैं हुआ उसे धोखा देकर और अपना राज्य पुनःप्राप्त करके फिर प्रशंसनीय कार्य करूँगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(नेपथ्य में)

हाय नाथ ! हाय !!

स्त्रियों के साथ शोक का ऐसा प्रतिकार मंत्रियों की असामर्थ्य सिद्ध करता है।

यहै शोक प्रतिकार है अबलनि आँसु बहाय।
मंत्रिहु सब असमर्थ हैं, दीन्ह्यो विलखिवताय ॥१५॥

प्रतिहारी—मंत्रिवर ! राजमाता ने आपसे कहला भेजा है।

यौगन्धरायण—क्यों, क्या कहला भेजा है ?

प्रतिहारी—यही कहा है।

यौगन्धरायण—अच्छा क्या संदेश है ?

प्रतिहारी—उन्होंने यह कहा है कि आप ऐसे कुशाग्र बुद्धि सुहृदय मंत्रिमंडल के रहते हुए भी वत्स नरेश कारागार में पड़े हैं। अब शत्रु से बदला लेने का क्या उपाय कर रहे हैं ? वास्तव में जो घोर आपत्तियों के आने पर भी भग्नहृदय न हो और वंचित हो जाने से उसे वैराग्य न हो, विघ्न और बाधा उपस्थित होने पर वह निश्चेष्ट न हो, वही यथार्थ बुद्धिमान पुरुष है। आप सचिव मंडली को प्रतिष्ठापूर्वक बुलाकर पहिले मंत्रणा करिये कि महाराज की रक्षा के लिये कौन सा उपाय किया जाय ? यों तो और मंत्री भी हैं परन्तु आप वत्सराज उदयन के मित्र होने के नाते मेरे पुत्र के समान हैं। इसलिये मेरे पुत्र ही बन्धन मुक्त करावें।

यौगन्धरायण—आप धन्य हैं ! आपने वही बातें कही हैं जो आप ऐसे राजवंशी को कहना चाहिये। मैं राजमाता की इस गुण ग्राहकता का अभिनंदन करता हूँ। हे विजये ! पानी लाओ।

प्रतिहारी—आर्य्य ! जैसा आदेश करें। आर्य्य जल ले आई। (जल लाती है)

यौगन्धरायण—इधर लाओ (आचमन करके) विजये ! राजमाता ने क्या कहा था ?

प्रतिहारी—उन्होंने कहा था कि मेरे बेटे को मेरा बेटा ही बन्धन मुक्त करावे।

यौगन्धरायण—हंसक ! महाराज ने क्या कहा था ?

हंसक—महाराज ने कहा था कि यौगन्धरायण से जाकर मिलना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यौगन्धरायण—विजये ! राजमाता को सूचित कर देना कि यौगन्धरायण ने इस प्रकार प्रतिज्ञा की है कि—

यदि राहु रूपी शत्रु से चन्द्रमा के समान ग्रस्त राजा को न छुड़ा लाऊँ, तो मैं यौगन्धरायण हा नहीं ॥१६॥

अखिल राहु ग्रस नरपति, ससिहिं छुड़ावे जौन ।
या जग मैं निज नाम सौं, कबहुं कहावौं तौन ॥

प्रतिहारी—आर्य्य ! बहुत अच्छा है (प्रस्थान)

(निर्मुद्रक का प्रवेश)

निर्मुद्रक—आर्य्य इस समय एक विलक्षण घटना हुई है । महाराज के ग्रह शान्ति के लिये ब्रह्मभोज का आयोजन किया था उनमें से एक विक्षिप्ताकार ब्राह्मण अन्य निमन्त्रित ब्राह्मणों की ओर संकेत करके कहने लगा कि पेट भरके खाओ क्योंकि निकट भविष्य में इस राज्य-वंश का अभ्युदय होने वाला है । यह कहकर वह तिराहित हो गया ।

यौगन्धरायण—परमात्मा करे उसके बचन सत्य हों ।

(ब्राह्मण का प्रवेश)

ब्राह्मण—(कुछ कपड़ों को दिखलाकर) इन वस्त्रों को आपके कार्य साधन के लिये उपयोगी समझ कर हा वह यहाँ छोड़ गये हैं क्योंकि इनसे उनका काम हो चुका । महर्षि वेद-व्यास इस गुप्त रूप से यहाँ पधारे थे ।

यौगन्धरायण—हाँ तो क्या वे वास्तव में पाराशर आत्मज भगवान वेदव्यास हा थे ?

ब्राह्मण—हा अवश्य वे ही थे ।

यौगन्धरायण—तो मैं भी इसकी परीक्षा करूँ ।

ब्राह्मण—अवश्य कीजिये ।

यौगन्धरायण—(वेश परिवर्तन करके) अच्छा मेरे रूप में भी पर्याप्त परिवर्तन हो गया । अब तो मैं अपने को महाराज के निकट पहुँचा हुआ हो समझूं । अब जाना, यह वस्त्र मानों पथ प्रदर्शन के लिये ही छोड़ दिये गये थे ।

उस साधु पुरुष ने उन्मत्त का सा वेष बनाया था और मानो मुझसे यह कहता था कि तुम अपने को ऐसे छिपाना और ऐसे ही राजा को छुड़ाना ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धरयौ साधु उनमत्त वपु, मोहिं इमि दियो बताय।
मौहूँ ऐसो रूप धरि, ल्याऊँ नृपहिं छुड़ाय ॥१७॥

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी—आर्य ! राजमाता कहती हैं कि मैं अपने पुत्र से मिलना चाहती हूँ ।

यौगन्धरायण—अच्छा मैं अभी आया। राजमाता चलकर मेरी बैठक में प्रतीक्षा करें।

ब्राह्मण—कोई चिन्ता की बात नहीं।

(ब्राह्मण का प्रस्थान)

यौगन्धरायण—हंसक ! तुम भी विश्राम कर लो।

हंसक—आर्य की जैसी आज्ञा हो (प्रस्थान)

यौगन्धरायण—विजये ! आगे चलो।

प्रतिहारी—आर्य ! आइये।

यौगन्धरायण—किसी ने सत्य कहा है।

काष्ठ के निरन्तर रगड़ते रहने से अग्नि उत्पन्न होती है। बराबर खोदते रहने से पृथ्वी से पानी निकलता है। उत्साह शील पुरुषोंके लिये कुछ भी असाध्य नहीं है। कर्तव्य पथ में आरम्भ किये हुये सारे प्रयत्न सफल ही होते हैं।

प्रकटै खरी अग्नि जवै लकरी,
मिलि आपुस माहिं घसी भले जाहीं।
धरती कह खोदौ जवै ही जवै,
जलहू कढ़ि आवत है तेहि माहीं ॥
कहो कौन कारज हैं जगमाहि,
उपायनि सौं जे किये नहि जाहीं ?
एहिते कहौं साहस सीलनि कौ,
वसुधा पै रह्यौ कछु दुर्लभ नाहीं ॥१८॥

(दोनों का प्रस्थान)

[प्रथम अंक समाप्त]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वितीय अंक

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—आभीरक ! आभीरक ! प्रधान प्रतिहारी को चंडमहासेन जी का आदेश सुनाओ कि वाराणासी नाथ के उपाध्याय आर्य जयवंत का विशेष सत्कार किया जाय। इन्हें सामान्य राजदूतों के समान न मानकर विशेष सुखप्रद आवास दिया जाय। जहाँ तक हो सके वहाँ तक इनका सर्व श्रेष्ठ आतिथ्य किया जाय।

क्या करें कन्या वाग्दान के लिये भिन्न-भिन्न राजाओं के यहाँ राजपूतों के आने का एक नैतिक व्यवसाय सा हो गया है। परंतु कुछ समझ में नहीं आता कि क्यों महाराज महासेन किसी के प्रस्थान को स्वीकार नहीं करते और न किसी को निराशाजनक उत्तर ही देते हैं। न जाने क्या होगा। यह बात दृढ़तापूर्वक नहीं कही जा सकती कि राजनन्दिनी का विवाह कहाँ होगा। क्योंकि अभी निश्चय ही उस वर की ओर से अद्यावधि कोई दूत नहीं आया है जिसकी यह निश्चय रूप से वधू होनेवाली है। इसीलिये राजेन्द्र उसकी प्रतीक्षा करते हुये भी राजाओं के गुणों को नहीं जानते ॥१॥

परन्तु सावधान ! अवरोध गृह निवासियों, सावधान ! महाराज महासेन स्वयं आ रहे हैं।

दुर्वांकुर के समान हरित एवं नीलमणि की शोभा की बिडम्बना करने वाले स्वर्ण केवल पहिनने के कारण विशालवाहु महाराज महासेन इस घने नालन्द प्रदेश से इस प्रकार से आ रहे हैं जैसे श्रवण कुमार स्कन्द आते हों।

नवल दूर्वादल सरिस वरनील मनिन प्ररोह।
जटित हेमाँगद रुचिर सौ नमित कंधर सोह॥
सघन चम्पक ताल वन सौ कढ़त भूप लखात।
जथा सर वन त्यागि आवत सम्भुसुत अवदात॥२॥

(प्रस्थान)

(इति विष्कम्भक)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सपरिकर राजा का प्रवेश)

राजा—ममहय खुरमगरेनु सीस मुकुटनि पै धारी।
बने भव्य नर पाल लखत नित दीठि हमारी।
पै तबलौं संतोष नाहिं मेरोहिय आवत।
जौलौं कुंजर विज्ञ वत्सनृप सिर नहिं नावत॥३॥

मेरे अश्वों की हका से उड़ती हुई मार्गरेणु को तो अन्य नरेश्वर भृत्यों के समान अपने मुकुटों पर धारण करते हैं परन्तु इतना होते हुये भी मुझे उस समय तक संतोष नहीं जब तक गज विज्ञान कुशल गुणशाली वत्सराज मुझे प्रणाम नहीं करता॥३॥

(वादरायण का प्रवेश)

कंचुकी—महाराज चंद्र महासेन की जय हो।

राजा—क्यों? जयवंत को ठहराने की व्यवस्था कर आये न?

कंचुकी—हाँ महाराज उनके यथोचित अतिथि सत्कार का यथेष्ठ प्रबन्ध कर आया हूँ।

राजा—ठीक किया। तुम तो राजवंश की परम्परा से सर्वथा परचित हो। अतिथियों का सत्कार इसी प्रकार करना चाहिये। वासवदत्ता के योग्य वरनिर्वाचन के लिये सब लोग किसी एक की सम्मति की अपेक्षा करते हुये स्तब्ध हो रहें हैं। (कंचुकी की ओर दृष्टिपात करके) वादरायण! तुम भी कुछ कहना चाहते हो?

कंचुकी—कन्या दान के विषय में मेरे हृदय में भी एक बात आई थी।

राजा—तो उसे क्यों नहीं कहते? यह तो प्रायः सर्वानुभूत प्रसंग है। तुम संकोच को छोड़कर अपनी निष्पक्ष सम्मति दो।

कंचुकी—महाराज! मुझे यही निवेदन करना है कि नित्यप्रति किसी न किसी राजा के यहाँ से राज विवाह कांक्षी आया ही करते हैं। परन्तु महाराज न तो किसी के प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं और न किसी को निराश-जनक उत्तर ही देते हैं। इसमें क्या रहस्य है?

राजा—वादरायण! इसमें यही रहस्य है कि वासवदत्ता पर मेरा निर्व्यूढ़ अपत्य स्नेह है इसलिये मैं उसे सम्वरण करने वाले राज कुमार में लोकोत्तर गुणों का सन्निवेश चाहता हूँ। अद्यावधि किसी निश्चयात्मक निर्णय तक न पहुँच सकने का यही कारण है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर होय विभूति कोऊ वर वंश की,
या पहिले अपने हिय चाहत।
पुनि होय दया सौं भरोई हियो,
मृदु पै तेहिकौ दृढ़ जानि उमाहत।
अवलानिकौ त्यौं अनुरोधगुने,
तेहि रूपकी रासि अनूप उमाहत।
प्रतिपाल सकै करि दारनिकौ,
वली साहसी होय यही जियौ चाहत ॥।

पहिले तो मैं श्लाघ्यकुल चाहता हूँ, फिर यह चाहता हूँ कि वर दयावान, कोमल स्वभाव, एवंशक्ति शाली हो।

पितु प्रयन्त सौं कन्यका, पतिधन लहत लखात।
अपर भाग्य आधीन है, नहि विरोध दरसात ॥५॥

कन्या को वर रूपी सम्पति पिता के प्रयत्न से ही प्राप्त होती है। अन्य बातें भाग्याधीन होती हैं, दृष्ठपूर्व बात अन्यथा नहीं होती।

भावत तोहि मृगया अधिक, तेहि हित रह्यौ उमाहि।
तऊ सचिवगन यतन सौं, जान न दैहै ताहि ॥६॥

उसका आचरण तो ऐसा ज्ञात होता है कि मृगया में उसका चित्त अनुरक्त हो जावेगा। परन्तु उसके अमात्यगण उसे ऐसा न करने देंगे।

कंचुकी—इन गुण गणो का समुदय महाराज ही में पाया जाता है।

राजा—इसीलिये अद्यावधि कोई निश्चय नहीं किया जा सका।

विवाह के समय जननी को दारिका वियोग का बड़ा दुखद अनुभव होता है इसलिये इस विषय में उसका परामर्श लेना भी आवश्यक है। महारानी को अभी बुला लाओ।

कंचुकी—महाराज का जो आदेश हो।

(प्रस्थान)

राजा—विवाहार्थ काशीनाथ का राजदूत आने के कारण मुझे शालंकायन का स्मरण हो आया जो वत्सराज उदयन को वन्दी बनाने के लिये गये थे। न जाने क्यों अब तक उनके पास से कोई समाचार नहीं आया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(सपरिकर महारानी का प्रवेश)

देवी—आर्य्यपुत्र की जय हो।

राजा—आइये यहाँ पधारिये।

देवी—आर्य्यपुत्र की जैसी आज्ञा हो।

राजा—आज वासवदत्ता कहाँ है ?

देवी—वह गान्धर्व मन्दिर में उत्तरा नाम्नी वैतालिकी के पास नारदीय वीणा सीखने गई है।

राजा—अरे ! इसको संगीत विद्या में कैसे प्रेम हुआ ?

देवी—उसकी सहेली कांचनमाला संगीताभ्यास करती रहती थी। उसे देखकर ही इसके हृदय में संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई।

राजा—बालकों को प्रायः ऐसी ही बातें अच्छी लगती हैं।

देवी—आर्यपुत्र से मैं भी कुछ निवेदन करना चाहती हूँ।

राजा—अच्छा, कहो क्यों न ?

देव—महाराज ! संगीत शिक्षक को नियुक्त कर लीजिये।

राजा—अब तो वासवदत्ता विवाह वयस्का हो गई उसके लिए शिक्षक नियुक्त करके क्या होगा ? उसके लिये योग्यतम संगीत शिक्षक उसका वर ही होगा।

देवी—अहा ! क्या वासवदत्ता अभी ही विवाह वयस्का हो गई ?

(कुछ रोने का नाट्य करती हुई)

राजा—वाह ! कहाँ तो नित्य प्रति इसके विवाह के बारे में ही कहा करती थी कहाँ अब उसके विरुद्ध खिन्नता का भाव प्रकट कर रही हो।

देवी—विवाह करना तो मैं अवश्य चाहती हूँ परन्तु दारिका वियोग के स्मरण से मुझे बड़ा दुख होने लगता है। इसके अतिरिक्त उसके लिये कोई वर भी आपने चुना है ?

राजा—वर निर्वाचन के सम्बन्ध में हम लोग अब तक किसी निश्चयात्मक निर्णय पर नहीं पहुँच सके।

देवी—अब तक नहीं ?

व्याहैं धिय तो जिय दुखत, बिन व्याहे बड़ि लाज।
व्यथित होत जननी हियौ, धर्म्म नेह के काज॥ ७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा—यदि कन्या का विवाह नहीं किया जाता तो लज्जा आती है, यदि ऐसा किया जाय तो चित को दुख होता है, मातायें धर्म एवं स्नेह में पड़कर निश्चय ही दुखित होती हैं।

अब वासवदत्ता शुश्रूजनों की सेवा करने के सर्वथा योग्य हो गई। आज वाराणसी नाथ के उपाध्याय आर्य जयवन्त यहाँ पधारे हैं और मुझे काशीनाथ के ऊपर श्रद्धा भी है। (स्वगत) यह तो कुछ उत्तर नहीं देतीं। नैनवारि प्रवाह से यह स्वयं व्याकुल हो रही हैं। ऐसी दशा में क्या निश्चय किया जाय ? परन्तु इतना होते हुये भी मुझे इनसे कह देना चाहियें (प्रगट) मैंने सुना है कि सम्बन्ध की इच्छा करते हुये कई राजा यहाँ आये हैं।

देवी—बहुत आडम्बर से कोई लाभ नहीं। वासवदत्ता उसी को देना चाहिये जिसके यहाँ जाकर उसे किसी प्रकार का कष्ट न होने पावे।

राजा—इन्होंने तो इस उत्तरदायित्व पूर्ण प्रश्न की संक्षेप में ही मीमान्सा कर दी अन्त में इसका उपालम्भ मुझ ही को सुनना पड़ेगा इसलिये तुम्हीं इसका निर्णय करो। देखो—

[मगधाधीश, काशीनाथ, अंगराज, सौराष्ट्रेश्वर, मिथिलाधीश, सूर सेनाधिराज आदिक कितने ही नरेश्वर वासवदत्ता सम्वरण के लिये प्रयास कर रहे हैं और सभी अपने लोकोत्तर गुणों को दिखाकर मेरी स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं] ॥८॥

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—वत्सराज

राजा—(सक्रोध) क्या ! वत्सराज कौन ?

कंचुकी—महाराज क्षमा प्रदान कीजिये। मैं श्रीमान् को मांगलिक समाचार सुनाने की शीघ्रता कर रहा था इसलिये यथार्थ निवेदन करना भूल गया। (विनयावनत होता है)

राजा—क्या मांगलिक समाचार सुनाने आये थे ? (सहर्ष और सचिन्त)।

देवी—(उठकर) आर्यपुत्र की जय हो। (जाने का नाट्य करती हुई)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राजा—प्राणाधिके ! मांगलिक समाचार सुनने का तुम्हें भी अधिकार है, । बैठो

देवी—आर्यपुत्र की जो आज्ञा हो (बैठती है)

राजा—(कंचुकी से) उठो उठो, स्पष्ट कहो ।

कंचुकी—खड़े होकर । अमात्य प्रवर शालंकायन इसी समय वत्सराज को बन्दी बनाकर लाये हैं ।

राजा—(प्रसन्न होकर) क्या कहते हो ? फिर से कहो ।

कंचुकी—यही कि मन्त्रिवर शालंकायन उदयन को बन्दी बनाकर लिये आ रहे हैं ।

राजा—अरे ! उदयन को ?

कंचुकी—क्या इसमें कोई संदेह है ?

राजा—अरे, शतानीक का पुत्र ?

कंचुकी—हाँ, महाराज ! वही ।

राजा—सहस्रानीक का पौत्र ।

कंचुकी—हाँ महाराज उसी को ।

राजा—कौशाम्बीश्वर को ?

कंचुकी—हाँ, महाराज ! हाँ, उन्हीं को ।

राजा—संगीत विद्या विशारद को ।

कंचुकी—हाँ, महाराज ! सुना तो यही है ।

राजा—तो क्या यह निश्चय है कि वत्साधीश उदयन पकड़े गये ?

कंचुकी—हाँ महाराज हाँ वही वत्सराज उदयन ।

राजा—तो क्या यौगन्धरायण ने कोशाम्बी से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया ?

कंचुकी—नहीं महाराज वह तो वहीं है ।

राजा—साश्चर्य ! यदि यौगन्धरायण कौशाम्बी में है तो मैं कदापि यह मानने को तैयार नहीं कि वत्सराज बन्दी बनाये गये ।

कंचुकी—महाराज ! आप मेरे ऊपर विश्वास तो करें ।

राजा—मैं ऐसा प्रमत्त नहीं हूं कि किसी के असम्बद्ध प्रलाप में अन्ध-विश्वास कर लूँ । कौन मानने को तैयार होगा कि किसी हंस ने मंदराचल उठा लिया ? जब तक उसका प्रधानामात्य यौगन्धरायण जीवित है तब तक ऐसा होना नितान्त असम्भव है । वत्सराज के वैरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी उनकी युद्ध चातुरी की सराहना करते हैं। वह कोई सामान्य योधा नहीं हैं।

तुम कहते हो कि उदयन पकड़ लिये गये, परन्तु मुझे इस पर विश्वास नहीं होता। क्या कभी मन्दराचल भी हथेली से उठाया जा सकता है? उसके रणशौर्य्य की प्रशंसा शत्रु भी करते हैं। और यौगन्धरायण की नीतिपटुता तो हमें भी विदित है ॥६॥

कंचुकी—मैं वयोवृद्ध ब्राह्मण हूँ। क्या अद्यावधि मैंने महाराज के सामने असत्य संभाषण भी किया है?

राजा—अच्छा, यदि वास्तव में उदयन पकड़े गये हैं तो मुझे बतलाओ कि शालंकायन के पास से कौन सा पवित्र पुरुष यह शुभ समाचार लेकर आया है?

कंचुकी—महाराज कोई नहीं। वह स्वयं एक द्रुतगति स्यंदन में बैठे हुये वत्सराज सहित यहाँ आये हैं।

राजा—ऐसे आये? अच्छा हुआ। आज से उज्जयिनी की सेना अपने चर्म वर्मादिक उतार कर रख दे और कुछ दिन के लिये विश्रान्त हो ले। आज से मेरे आज्ञानुवर्ती वह राजन्य वर्ग निशंक हो जाँय जो उदयन से भयभीत होने के कारण मेरे पास गुप्तरीति से राज्यकर भेजा करते थे। अधिक क्या कहें मेरा महासैनत्व आज ही सफल हुआ।

देवी—क्या वास्तव में शालंकायन वत्सराज को पकड़ लाये?

राजा—तुम्हारा इस प्रश्न से क्या अभिप्राय है?

देवी—कोई विशेष अभिप्राय नहीं, केवल यही कि यदि उदयन आ गये हों तो फिर वासवदत्ता को अन्य किसी को देने का स्वप्न में भी विचार न किया जाय।

राजा—वह तो मेरा रणपराजित शत्रु है। बादरायण! शालंकायन कहाँ हैं?

कंचुकी—वह तो भद्रद्वार पर उपस्थित हैं।

राजा—अच्छा, जाओ और मन्त्रिवर भरतरोहक को सूचना दो कि वह वत्सराज को राजनन्दोचित सत्कार के साथ स्वयं मेरे पास बुला लायें।

कंचुकी—स्वामी की जो आज्ञा हो। (प्रस्थान)

राजा—और भी सुनो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कंचुकी—(लौटकर) हाँ, महाराज ! कहिये क्या आज्ञा ?

राजा—वत्सराज को देखने के लिये किसी को निषेध न किया जाय।

मेरे पौरजलापद अपने वीरोचित कार्य्यों से प्रसिद्ध उस शत्रु को देख लें जो इस समय यज्ञ के लिये लाये हुये विगतक्रोध संयत सिंह के समान हो रहा है।

जा अरिके गुन गन सुने प्रजा लेहि तेहि देखि।
अन्तरगत आमरष हरि, मषहित खरौ विशेखि ॥१०॥

कंचुकी—महाराज की जो आज्ञा (प्रस्थान)

देवी—यह राजकुमार तो अनेक अभ्युदय लक्षण सम्पन्न प्रतीत होता है। इससे बढ़कर महाराज ! आदरास्पद और कौन हो सकता है ?

राजा—मैंने भी अद्यावधि इतना संतोष सुख कभी अनुभव नहीं किया जितना कि वत्सराज को बन्दी सुनकर मुझे हुआ है।

देवी—अरे ! ऐसा वीर है ?

राजा—क्यों नहीं ?

देवी—अन्य राजाओं ने तो सम्बन्ध स्थापित करने के लिये अपने दूत भेजे परन्तु वत्सराज ने अपना कोई दूत नहीं भेजा ?

राजा—देवी ! तुम्हें इस बात का पता नहीं कि यह मेरे महासेन के नाम को ही हीन दृष्टि से देखता है। सम्बन्ध स्थापित करना तो दूर रहा।

देवी—हीन दृष्टि से देखता है तो इसका कोई कारण होगा। या तो वह निरा मूर्ख होगा या अबोध बालक होगा।

राजा—बालक तो अवश्य है परन्तु उसे मूर्ख नहीं कहा जा सकता।

देवी—फिर उसे इतना अभिमान क्यों है ?

राजा—अभिमान ! अभिमान है उसे अपने प्रकाश राजर्षि वंश की उपाधि का। पुराण प्रख्यात पुरुवंशवातंस भरताधिप होने का और अपने वंश परम्परागत संगीत विद्याविशारदता का और सब से बढ़कर अपनी रूप यौवन सम्पन्नता का। और साथ ही साथ अनुरागिनी एवं विश्वासपूर्ण प्रजा का।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी—इसमें तो सभी वरोचित गुणों का सुन्दर समन्वय है परन्तु न जाने क्यों उसकी बुद्धि में हम लोगों के विरुद्ध ऐसा विद्वेष भाव जाग्रत हो उठा है।

राजा—देवी ! इसमें आश्चर्य का कौनसा प्रसंग है ?

पृथ्वी को भस्म करता हुआ मेरा अग्नि के समान प्रज्वलित प्रताप-शासन इसी के राज्य में हतप्रभ हुआ है ॥११॥

परीघास पै आगि सब, भूमिहिं देत जराय।
पै सासन मम मन्दभौ, तासुदेश मैं जाय॥

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—महाराज महासेन की जय हो। महाराज के आदेशानुसार अमात्यप्रवर शालंकायन अत्यन्त प्रतिष्ठा पूर्वक वत्सराज को बुलाये ला रहे हैं और उन्होंने यह घोषवती वीणा विजयोपहार में आपके पास भेजा है और निवेदन किया है कि यह भरतवंश की शोभा एवं वत्सराज कुल का लोकोत्तर गौरव है। यह आप ही के यहाँ रहने के योग्य है (वीणा देता है)

राजा—इस विजय लक्ष्मी को मैं अवश्य स्वीकार करूँगा (वीणा को लेकर) अरे ! क्या यही घोषवती है ?

लगत स्रवननि कौ सुखद अति मधुर जाकी राग।
नखनिसौंघिसि गये जाके अग्रतार विभाग॥
मुनि वच्छगत मंत्रविद्यासी परम सुख देत।
गजनिहू कौ हीय वर वस आपुवस करि लेत॥१२॥

श्रवण मात्र से कानो को अत्यन्व आनन्द देने वाली, स्वभाव ही से अरुण, नखों के लगने से कुछ घिसी हुई, मुनियों के वल्या के समान मंत्रविद्या की तरह यह वीणा वारणो के हृदयों को बरबस अपनी ओर खींच लेती है ॥१२॥

जैसे गोपालक करत अर्थशास्त्र अनुराग।
पै पालक व्यायास रुचि, अरुसंगीत विराग॥१३॥

परन्तु हाँ रणविजय में उपहार रूप से जो मणि माणिक्य आदिक पात्र होते हैं उनका उपयोग यदि आत्मीयजनों के द्वारा किया जाय तो बड़ा परितोष होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[जेष्ठ राज कुमार गोपालक अर्थशास्त्र आदि के अध्ययन में लगे रहते हैं। क्योंकि उन्हें राज कार्य में ही योग्यता प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा है] ॥१३॥

कनिष्ठ कुमार अनुपालक दैहिक परिश्रम में निरत रहते हैं क्योंकि उन्हें नाद-विद्या व्यसन में अधिक अभिरुचि नहीं। तो फिर यह घोषवती वीणा किसको दी जाय ? परन्तु हे देवी ! तुमने तो अभी कहा था कि वासवदत्ता वीणावादन सीख रही है।

देवी—हाँ महाराज मैंने कहा था।

राजा—तो फिर यह वीणा उसे ही क्यों न दी जाय ?

देवी—वीणा मिल जाने से तो फिर वह इसी की हो जावेगी।

राजा—थोड़े दिन तो उसे और खेलने दीजिये, पति के गृह में जाकर फिर ऐसा सुख कहाँ रक्खा है। वादरायण—वासवदत्ता को—कहाँ है ?

कंचुकी—महाराज वह तो अमात्य के यहाँ है।

राजा—वत्सराज भी तो वहीं होंगे।

कंचुकी—शृङ्खलाओं में आवद्ध होने के कारण तथा व्रणांकित कलेवर के कारण वे रुग्णशय्या पर मध्यम गृह में पड़े हैं।

राजा—दीर्घ संताप का विषय है कि उसका शरीर इस प्रकार क्षतविक्षत हुआ परन्तु इसका कारण भी उनका वृथा वीरत्व प्रदर्शन है। इस सम्बन्ध में शालंकायन की निर्दयता अवश्य अमार्जनीय है, क्योंकि उन्होंने वत्सराज को ऐसी चिन्ताजनक अवस्था में छोड़कर उनकी देख भाल न की। वादरायण ! भरतरोहक को जाकर सूचित करो कि शीघ्रातिशीघ्र उनके व्रण बन्धन का प्रबन्ध किया जाय।

कंचुकी—महाराज की जो आज्ञा हो।

राजा—और भी सुनो।

कंचुकी—हाँ महाराज।

राजा—देखो ! उनके राजोचित प्रतिष्ठा में किसी प्रकार की कमी नहीं होने पावे। उनकी चेष्ठा और इंगित से ही उनका अभिप्राय समझ लिया जाय और उसकी तत्काल पूर्ति की जाय। संग्राम सम्बन्धी कोई प्रसंग उनके समक्ष न छेड़ा जाय। छींक अथवा जमाई आने पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिरजीव आदिक आशीर्वचन कहे जायँ। यथासमय स्तुति पुरस्सर क्रियाओं की सूचना दीजाय !

कंचुकी—महाराज की जो आज्ञा।

(जाता है और लौट आता है।)

महासेन की जय। मार्ग में ही व्रण बन्धन का प्रबन्ध कर दिया गया। मध्याह्न होने के कारण अभी उनके खोलने का समय नही आया।

राजा—वीरवर वत्सराज कहाँ हैं ?

कंचुकी—वह मयूरइष्टमुख मन्दिर में हैं।

राजा—वह स्थान गिरने योग्य नहीं है। भगवान भास्कर की प्रदत्त मयूष मालाओं से बचाने के लिये उन्हें मणि भूमि प्रासाद में रखना चाहिये।

कंचुकी—महाराज को जो आज्ञा।

(बाहर जाता है फिर लौट आता है)

महाराज के आदेशानुसार सारा प्रबन्ध कर दिया गया। मंत्रिवर भरतरोहक आपका दर्शन करना चाहते हैं।

राजा—मैंने वत्सराज का जो सत्कार किया कदाचित यह भरत रोहक को पसंद नहीं है। कारण यह है कि वह इसे राजनीतिक दृष्टि से देखते हैं। परन्तु कोई चिन्ता का विषय नहीं मैं उन्हें समझा दूँगा।

देवी—क्या आपने वत्सराज के साथ सम्बन्ध करना निश्चय कर लिया है ?

राजा—अभी कुछ नहीं कह सकता।

देवी—शीघ्रता करने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि वासवदत्ता भी अभी विलकुल अबोध बालिका है।

राजा—जैसा आप कहेंगी वैसा ही किया जायेगा अब आप अन्तःपुर में पदार्पण कीजिये।

देवी—महाराज की जो आज्ञा हो।

राजा—(चिन्ता करके)

पहिले प्रबल अभिमान के कारण वैर था परन्तु इनके बन्दी बनाकर लाये जाने से अब मेरा रोषशान्त हो गया। अब इन्हें संग्राम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से विपन्न क्लेशित एवं संशयमग्न सुनकर मुझे यह चिन्ता हो रही है कि यह किसी प्रकार अच्छे हो जावें ॥१४॥

पहिले लखि वाके अभिमानहिं राख्यौ बैर बढ़ाई ।
भयो तबहिं मध्यस्थ लियों जब बन्दी वाहि बनाई ॥
पै अब समरविपन्न जानि तेहि अरुवायल अवरेखी ।
तासु प्रान रच्छनहित चिंता मोहिय होत विसेषी ॥१४॥

द्वितीय अंक समाप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तृतीय अंक

(कृतिम वेषो विदूषक का प्रवेश)

विदूषक—(इधर उधर देखकर) अरे इस देव कुल प्रांगण में मैं अपने प्रियपात्र को रखकर दक्षिणा ग्रहण करने गया था उसे ग्रहण करके मैं शीघ्रता पूर्वक चला तो आया परन्तु मेरा प्रियपात्र दृष्टिगोचर नहीं होता। (चिन्तत होता हुआ) एकही मोदक के आस्वाद से सन्तुष्ट होकर वह तस्कर मेरे पीछे भी तो न लगा। यहाँ के प्राकार भी इतने ऊँचे हैं कि जिनके कारण यहाँ स्वानों के आगमन की सम्भावना नहीं की जा सकती और न अन्य तुष्ट लोभी पथिक ही उसे देख सकते हैं। तो इन लड्डुओं का हुआ क्या ? सम्भव है कि मैंने ही इनका भोग लगा लिया हो परन्तु अब स्मरण न आता हो। अच्छा इन्हें वमन करके देखूँ (वमन का नाट्य करता हुआ) अहँ ! अहँ ! भीतर से तो वृद्ध वाराह के समान निर्गन्ध उद्गार आ रहा है। या चामुन्डा महादेवी के देवालय में रक्खा हुआ देखकर भगवान शंकर ने समझा हो कि यह हमारा धन है और इस विचार से प्रेरित होकर उन्होंने उसे ले लिया हो। यह ऊर्ध्वरेता होने के साथ-साथ स्वेच्छानुवर्ती हुये हैं। बहुत संभव है कि यह इन्हीं की निरंकुशता हो परन्तु इस बात का पहिले भलो भाँति अनुसंधान करना चाहिये। परन्तु हाँ यदि मोदकपात्रापहरण शंकर ही का काम है तो चलकर उन्हो से माँगना चाहिये इसलिये उन्हीं से इनकी याचना करनी चाहिये क्योंकि वह तो उनके चरणपंकजों के निकट ही कहीं पड़ा होगा (माँगता है) भगवन् मेरा मोदकपात्र कृपया मुझे दो। क्या आप मेरी सम्पति अपहरण करना चाहते हैं ? हो सकता है कि मेरा ही भ्रम हो या मेरे ही दैव दुर्विपाक से सपात्र मोदक हो कृतिम हों अथवा चित्रार्पित हों और संतप्त विलोचनों की धुन्ध के कारण वह स्पष्ट रूप से परिलक्षित नहीं किये गये हों। अतः इन्हें भलो भाँति स्पर्श करके देखलूँ। धन्य है चित्रकार तेरी अंकन कुशलता सर्वथा अभिनन्दनीय है। मैं जितना ही ध्यान पूर्वक देखता हूँ उतनो ही उसमें एक न एक प्रकार की नूतनता दृष्टि गोचर होती है। कोई चिन्ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
559
BVBSSMV

की बात नहीं। इसे सलिल से प्राच्छालन करना चाहिये। परन्तु सलिल का भी तो यहाँ पता नहीं। अहा ! यह निर्मल तड़ाग सामने ही तो है। मैं तो अनुमान करता हूँ कि मेरे ही समान भगवान् शंकर भी इनके सम्बन्ध में वंचित हुये हैं। (नेपथ्य में)

लड्डू ले अहा ! हा ! ले लड्डू ले

विदूषक—(सुनकर सोचता हुआ) वास्तव में मेरे मोदकपात्र का चुराने वाला यही पागल ही हो सकता है और यह हँसता भी ऐसे है जैसे जलवृष्टि के अनन्तर वेग से बहती हुई मैली एवं अपावन जल की धारा। अरे ओ उन्मत्त ठहर अन्यथा अभी इस दण्ड प्रहार से तेरा मस्तक चूर्ण कर दूँगा।

(उन्मत्तक का प्रवेश)

उन्मत्तक—ले ! लड्डू ले !

विदूषक—लाओ मेरा स्वादिष्ट मोदक !

उन्मत्तक—अरे उन्मत्तक ! कैसे मोदक और कहाँ से आये ? कौन उनका स्वामी है और किस काम में आते है ? इनका भोग लगाया जाता है या यह बाँध के रक्खे जाते हैं अथवा यह बहा दिये जाते हैं ?

विदूषक—इनमें से कोई विधान भी इन पर लागू नहीं है। न खाये जाते हैं न बहाये जाते हैं।

उन्मत्तक—पर मैं तो इनका भोग लगाने को उत्सुक हो रहा हूँ।

विदूषक—अरे उन्मत्तक ! मेरा मोदक पात्र मुझे दे। दूसरे के सम्पत्ति का अपहरण करने के लोभ में न पड़ जाना।

उन्मत्तक—मुझे फँसाना असम्भव है। यह मोदक ही मेरा परित्राण करेंगे।

[इनमें भाँति-भाँति के द्रव्य पड़े थे। परन्तु हाँ पुराने होनें के कारण इनके स्वाद में कुछ अंतर सा पड़ गया था तथापि इन्हें मैं राजमन्दिर से पर्याप्त धन देकर सम्पादनार्थ लाया था।]

विदूषक—अरे तू पूरा उन्मत्त हैं। मेरा मोदक पात्र मुझे दे। इन्हीं का आश्रय अवलम्बन करके मुझे उपाध्याय कुल तक पहुँचना है।

उन्मत्तक—अरे भाई मुझे भी तो इन्हीं के आश्रय से शत योजनावधि यात्रा तय करनी है।

विदूषक—अरे ! क्या तू ही सुरराज ऐरावत है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन्मत्तक—अवश्य ऐरावत हूँ। जिस समय सुरेन्द्र मेरी पीठ पर बैठ जाते हैं उस समय तो मैं सुरराज बन जाता हूँ अन्यथा नहीं। मैंने सुना है कि उनके पैरों में रस्सी बँधी हुई है। कोई चिन्ता नहीं पवन चक्र में पड़े हुये मेघधारा प्रतिबन्धक की सौदामिनीकशा प्रहार से प्रताडित करके छिन्न-भिन्न किया जायगा।

विदूषक—अरे उन्मत्त तू तो अपनी हाँक रहा है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तू मुझे मेरा मोदकपात्र न देगा। तो सुन यहीं बैठकर तेरे नाम पर विलाप करूँगा।

उन्मत्तक—चाहे विलाप कर चाहे प्रलाप कर। देख मैं भी विलाप करता हूँ।

विदूषक—अरे क्या तू ब्राह्मण है? क्या यही तेरी ब्राह्मणता है?

उन्मत्तक—देख मैं अभी प्रलाप करता हूँ। सुरेश्वर कारागार में पड़े हैं। सुरेश्वर कारागार में पड़े हैं।

विदूषक—तुझे कौन ब्राह्मण कहता है (नेपथ्य में) (अरे श्रद्धापूर्ण ब्राह्मण इस प्रकार भयभीत हो ?)

विदूषक—(सानन्द) अहा भगवान् चन्द्रदेव का आगमन हुआ जिनसे नक्षत्रावलि चमक उठी (कुछ वैराग्य का नाट्य करते हुये) परन्तु ब्राह्मण के लिये श्रद्धालु होना बिलकुल व्यर्थ है। देखो यह सन्मार्गी श्रमणक हमें अभय करता है।

(श्रमणक का प्रवेश)

श्रमणक—अरे ब्राह्मण श्रद्धालु !, भयभीत मत हो। कोई यहाँ पर है? तुम्हारे आगमन और विलाप का क्या हेतु है?

विदूषक—(स्वगत) क्या श्रमणक प्रतिहारी का भी कार्य सम्पादन करता है? (प्रगट) आइये श्रमणक जी देखिये इस उन्मत्तक ने मेरा मोदक पात्र ले लिया है और अब देने से निषेध करता है।

श्रमणक—कहाँ है मोदक हम भी तो देखें?

उन्मत्तक—देखिये यह है।

श्रमणक—(खाकर लड्डुओं पर थूक देता है।)

विदूषक—शोक! श्रमणक ने उन्मत्तक के हाथ पर थूक दिया जिससे वे लड्डू खराब हो गये। हो सकता है इसने पहिले से इन पर दृष्टि लगा रक्खी हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रमणक—अरे उन्मत्तक लड्डुओं को बहा दे। ये तो तण्डुलों के बने हुये हैं और अब तो सड़ने के कारण बजबजा रहे हैं। वासर्णी फेन के समान इन पर मैल लग गयी है। यदि तू इनका भक्षण करेगा तो तुझे जीर्णज्वर हो जायगा।

विदूषक—कैसे दुर्भाग्य का प्रसंग है? मैं तो इन मोदकों को खाने के लिये अत्यन्त उत्सुक हो रहा था परन्तु अभक्ष्य होने के कारण अब इनका स्वाद न ले सकूँगा।

श्रमणक—अरे उन्मत्तक इन्हें जल्दी बहा अन्यथा मैं ही तुझसे छीन कर बहा दूँगा।

उन्मत्तक—नहीं नहीं अपने रोषावेष को नियंत्रित कीजिये और इनको फेंकिये भी नहीं क्योंकि इन्हें आप स्वीकार करेंगे।

श्रमणक—अरे! ब्राह्मण भक्त तूने मेरा प्रचंड प्रताप देखा?

विदूषक—यह उन्मत्तक अपनी भय कंपित उँगलियों से मोदक पात्र को उठाये हुये आ रहा है क्योंकि इसे इस बात का भय है कि ऐसा न हो कि श्रमणक इसे कहीं श्राप दे दे। अरे उन्मत्तक! ला मोदक पात्र मुझे दे।

श्रमणक—लीजिये, आइये। इन लड्डुओं को स्वीकार करके इनके बदले में ऐसा कीजिये जिससे मैं आपका सुयश बखानता रहूँ।

विदूषक—अच्छा यदि यह विजयप्राप्त हो जायँगे तब तो अवश्य मैं आपका आभारी बना रहूँगा। मुझे एक गृहस्थ ने प्रतिग्रह के रूप में इन्हें दिया था। आपका उसी रूप से इन पर समानाधिकार रहेगा। और आप ऐसे सत्पात्र को यदि यह दान रूप दिया जायगा तो इसके दान की सार्थकता समझी जायगी (उसको देता है) अच्छा अभी उन्मत्तक अग्निमुखगृह की ओर जाय। मध्याह्न की बेला आ गई इसलिये यहाँ पर कोई है भी नहीं। मैं भी इस दक्षिणाद्रव्य को पंथ में ही कहीं रखकर अभी आ रहा हूँ। एक का कर्त्तव्य तो यह है कि वह साड़ी की देख रेख करता रहे और दूसरा उसका मोल चुकाता रहे।

(सब का अग्निगृह में प्रवेश)

योगन्धरायण—वसन्तक! यह अग्निगृह भी अपूर्व है।

विदूषक—यहाँ तो कोई दृष्टिगोचर नहीं होता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यौगन्धरायण—तो आवो हम तुम दोनों ही परस्पर मिल भेंट लें।

दोनों—अच्छा (परस्पर मिलते हैं)

यौगन्धरायण—धन्य है। आप लोगों ने बड़ा परिश्रम किया अब दोनों महानुभाव पधारें।

दोनों—जैसी आज्ञा (बैठते हैं)

यौगन्धरायण—वसन्त ! भला यह तो बताओ क्या तुमने महाराज उदयन का प्रतिदर्शन प्राप्त किया ?

विदूषक—हाँ, अवश्य वे मेरे दृष्टिगोचर हुये।

यौगन्धरायण—परमात्मा की कृपा से विभावरी तो सकुशल व्यतीत हो गई अब परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दिवस भी सकुशल व्यतीत हो।

दिवस के व्यतीत हो जाने पर रात्रि की प्रतीक्षा की जाती है। मङ्गलमय प्रभातकाल में दिन की फिर चिन्ता होती है। परन्तु जो लोग आने वाले अशुभों की ही प्रतीक्षा करते रहते हैं, उनकी निवृति व्यतीत काल को देखकर ही होती है ॥२॥

विदूषक—आपका कथन यथार्थ है। काल क्रम के अनुसार तो दिन रात दोनों ही बराबर होते हैं परन्तु पराधीन कारागार निवासियों के लिये विभावरी विशेष रूप से भयावह होती है क्योंकि रात्रि उन्हीं के लिये भयावनी होती है जो दूसरों को व्यवहार में धोखा देते हैं, जिनको अन्य लोगों से प्रेम नहीं होता तथा जिनके छिद्र दिन में जाने जाते हैं।

परवञ्चनपटु अरु जिन्हैं, लोगनि सौ नहिं प्रीति।
ज्ञात छिद्र जिनके दिवस, तिनहिं निसा मैं भीति ॥३॥

यौगन्धरायण—वसन्तक क्या महाराज से तुमसे बातचीत हुई ?

विदूषक—हाँ हुई। वह तो मैं आपसे पहिले ही कह चुका। आज चतुर्दशी का स्नान भी मैं अपने सामने ही करवा आया।

यौगन्धरायण—तो महाराज नहा भी चुके ?

विदूषक—हाँ, अवश्य।

यौगन्धरायण—संध्या वंदन आदि से भी निवृत्त हो चुके होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विदूषक—जी हाँ। परन्तु विवशता के कारण प्राणायाम मात्र करके ही सन्तुष्ठ रहे।

यौगन्धरायण—कारागार में पड़कर भी महाराज ने इस संन्ध्या बंदन को भुलाया नहीं। समय भी बड़ा बलवान होता है।

महाराज के स्नानानन्तर पूजा करने के उपरांत पटह बजाये जाते थे। कुटिल काल की गति से आज उसी महाराज के तिथिपूजन के अनन्तर बेड़ियों की झंकार सुनाई पड़ी ॥४॥

भूपति जबहि अन्हाय देव पूजनिहित जाई।
अस्तुति के उपरान्त पटह धुनि परत सुनाई॥
देवन वन्दन काज पर्वदिन जान सौ पावत।
बेड़िन की झनकार तवहि कानन मैं आवत ॥५॥

रुमण्वान—विशेष रूप से चिन्तत होने का कोई प्रसंग नहीं। बहुत सम्भव है कि आपके प्रचंड प्रताप से ही महाराज को फिर पूर्ववत राज्य प्राप्त हो।

यौगन्धरायण—वसन्तक! जाकर महाराज से फिर मिल आवो और साथ ही यह भी कह आवो कि आपको कारागार से छुड़ाने के लिये जिन-जिन साधनों का उपयोग किया गया था उनका परिणाम कल दृष्टिगोचर होगा। यहाँ महाराज चंडमहासेन का परमप्रिय नीलगिर नाम का वारणेन्द्र रहता है वहाँ पर चारों ओर ऐसी-ऐसी ओषधियाँ डाल दी गई हैं जिनकी गन्ध से वह अपनी दैनिक क्रिया करने में असमर्थ हो जाय। इसके अनन्तर धूप गंधादिक के साथ अनुकूल पवन के द्वारा उसकी मस्तिष्क क्रिया को उत्तेजित करने का प्रबन्ध किया जावेगा। इसके अनन्तर गजमद प्रयोगों के द्वारा उसे चैतन्य करके उसका क्रोध कृसान और भी प्रदीप्त किया जायेगा। इसके बाद कुछ आतिशबाजी भी दागी जायगी, मार्ग स्थित देवालयों में शंख दुंदभी आदिकों का तुमुल रव किया जावेगा जिसके कर्ण गोचर होते ही वह मदमत्त मातंग चारों ओर उत्पात मचाने लगेगा। ऐसी दशा में महासेन अवश्य आपसे इस बात के लिये प्रार्थना करेंगे कि आप इस हाथी को शान्त करें क्योंकि उन्हें यह बात भली भाँति मालूम है कि आप गजवशीकरण विद्या को अच्छी तरह जानते हैं। उस समय महासेन स्वयं तुम्हें कारागार मुक्त कर देंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और आप अपनी घोषवती वीणा को लेकर नीलगिर हाथी को अपने वश में ले आयेंगे। फिर क्या है ? उस पर बेखटके बैठकर भगाते हुये विन्ध्याचल को पार करके महाराज एक ही दिन में अपने राज्य सीमा में पहुँच जायेंगे और शत्रु सेना आपका पीछा करने का विचार ही करती रहेगी।

हाथी को इतने वेग से चलाना कि शत्रु सैनिक उसे अपने मन से भी न पकड़ सकें और सिंहनाद के समाप्त होने से पहिले विन्ध्याचल के पार हो जाना। एक ही दिन में तीनों दशाओं का अनुभव करना, और जिस छद्म से पकड़े गये थे उसी के द्वारा मुक्ति पाना ॥ ५ ॥

रुमण्वान—वसन्तक क्या विचार कर रहे हो ?

विदूषक—मैं यही सोच रहा हूँ कि आपकी इस दीर्घा आयोजना में कोई विघ्न उपस्थितत न हो जाय ?

दोनों—इसका अनुमान कैसे किया जा सके ?

विदूषक—मेरे विचार में जो कुछ आया वह मैंने निवेदन कर दिया अब आप जानें।

यौगन्धरायण—इसमें तो हमें कोई विघ्न की सम्भावना दिखलाई नहीं पड़ती।

विदूषक—महाराज की नीति से विघ्न की सम्भावना की जा सकती है—

यौगन्धरायण—सो कैसे ?

विदूषक—सुनिये मैं निवेदन करता हूँ।

दोनों—कहिये हम सुन रहे हैं।

विदूषक—विगत कालाष्टमी को वासवदत्ता यक्षिनी महारानी के देवालय में पूजा करने गई थी। उस समय उसकी धात्री उसके साथ थी। विवाह न होने के कारण वह खुली शिविका में बैठी थी। उस दिन जल की नाली टूट गई थी। इसीलिये वासवदत्ता राज मार्ग को छोड़कर कारागार के निकटवर्ती मार्ग में होकर उक्त मन्दिर को गई थी।

यौगन्धरायण—अच्छा फिर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विदूषक--उस दिन महाराज शिवनामी प्रमुख कारागार रक्षक को कुछ उत्कोच देकर कारागार के द्वार तक धीरे-धीरे चले आये थे।

दोनों--फिर क्या हुआ ?

विदूषक—महाराज ने विमानवाहकों के स्कन्धो पर रक्खी हुई खुली शिविका में बैठी हुई राजनन्दनी वासवदत्ता के रुपलावण्य को भली भाँति देखा।

योगन्धरायण—तो फिर क्या हुआ ?

विदूषक—फिर होता क्या ? उसी कारागृह को रंग महल समझ कर महाराज वासवदत्ता के काल्पनिक प्रेम मदिरा का पान करके उन्मत्त हो रहे हैं।

यौगन्धरायण—मेरा अनुमान यह है कि महाराज उसके ऊपर अनुरक्त न होंगे।

विदूषक—मुझे तो ऐसा लगता है कि इस प्रेम से किसी अनर्थ का सूत्रपात्र होगा।

यौगन्धरायण—मित्र रुमण्वान ! अब अपनी आत्मा और भी अधिक दृढ़ करो क्योंकि वृद्धावस्था को भी इसी प्रकार व्यतीत करना पड़ेगा।

विदूषक—महाराज ने एक बात और भी कही थी कि यौगन्धरायण से कह देना कि मेरे छुटाने के लिये उन्होंने जो कुछ साधन सोचे हैं वह मुझे पसंद नहीं। अच्छा तो यह है कि मैं भी मुक्त हो जाउँ, और साथ ही साथ चंड महासेन का अपमान भी किया जाय। विषय वासना के भाव से पीड़ित होकर मैं ऐसा प्रस्ताव नहीं कर रहा हूँ। मेरे अपमान का शुल्क भी लेना चाहिये। इस प्रस्ताव को सुनकर वह मेरा उपहास न करें।

यौगन्धरायण—महाराज ने वैरी का पराभव करने के लिये कैसा अपूर्व प्रयत्न सोच रक्खा है। अप्रतिहत प्रत्युत्पन्न मतित्व इसी को कहते हैं। हम लोगों के निधन का अच्छा मार्ग निकाला है। वैरी के कारागार में पड़कर भी महाराज को प्रेम प्रसंग की ही बात सूझती हैं। इसी को रसिकता कहते हैं।

आपने ही हाथ सौ बिछाई है चटाई जहाँ,
सोई भूमि कैधौं भूपदाप उपजावै हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कैधौं पग वेड़ी की मधुर झनकार आपु,
ताके हिय धाम काम कौतुक जगावै हैं।
द्यासनि के फेर सौ पर्यौ है कारागार माहिं,
ताहि कहि नृप जवै रच्छक बुलावै हैं।
ऐसो कौन या जग भयो है ताहि सुनि जो न,
मदन विहारनि कुसल बनि आवै हैं ॥६॥

क्या अपने ही हाथों से भूमि पर बिछाई हुई चटाई उनके हृदय में काम उत्पन्न करती है, या वेड़ियों की झनकार प्रेम पैदा करती है, कारागार में रहकर भी रक्षकों द्वारा राज शब्द से अपने को सम्बोधित किया सुनकर भला मनुष्य मदन व्यापारों में कुशल क्यों न हो ? ॥६॥

विदूषक—हम लोगों ने अपनीं ओर से कुछ नहीं उठा रक्खा। पूर्ण रूप से प्रयास भी किया परन्तु अब भी यदि उनकी यही अभिलाषा है तो आवो हम लोग कौशाम्बी को चलें और इनके भाग्य में जो कुछ बदा होगा वह होकर रहेगा।

यौगन्धरायण—तू तो पूरा वसंतक ठहरा। तू क्या प्रलाप कर रहा है ? भला दुख एवं मदन व्याधि से विपन्न स्वामी को हम लोग छोड़ चलें। वह न तो मित्रों का सत्परामर्श ही सुनता और न देश काल ही को देखता है।

पोड़ित जो दुख मदन सौं, कैसे त्यागौं ताहि।
जो न समै असमै लखत, सुनत हितुनकी नाहिं ॥७॥

विदूषक—तो तुम लोगों को इस प्रकार पड़े पड़े सड़ना होगा।

यौगन्धरायण—यही हमारे लिये श्रेयस्कर है।

विदूषक—उसी दशा में यदि विश्व हमारे इन कार्य कलापों का प्रत्यक्ष दर्शी हो।

यौगन्धरायण—हम लोगों को विश्व की प्रत्यक्ष दर्शिता का कोई प्रयोजन नहीं। हम लोगों ने महाराज के उद्धार के लिये कार्य हाथ में लिया है।

विदूषक—वह भी तो इसका महत्व स्वीकार नहीं करते।

यौगन्धरायण—कालान्तर में वह अवश्य इसे स्वीकार करेंगे।

विदूषक—न जाने, यह कालान्तर कब होगा ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यौगन्धरायण--जब समारब्ध कार्य का परिणाम सुखद होगा तभी।

विदूषक--तब तो फिर जैसा वह चाहते हैं उनके साथ राजनन्दिनी वासवदत्ता के हरण करने का भी प्रयत्न कीजिये।

रुमण्वान--हम लोग यही सोच रहे हैं। अवश्य दोनों ही को ले चलेंगे।

यौगन्धरायण--अच्छा, मैं एक प्रतिज्ञा और भी करता हूँ।

जैसे अर्जुन ने सुभद्रा हरण किया था या जैसे नाग पद्मलता को उठा लाता है उसी प्रकार यदि राजा उदयन वासवदत्ता को न लावे तो मैं यौगन्धरायण नहीं ॥७॥

हर्यो सुभद्रहि पार्थ ज्यों, करिवरलतहिं ललाम।
ताहिं न लावै नर पति जौ, तौ नहिं मेरो नाम॥
दीरघदृग नरपति सुता, बीना गज अभिराम।
जौ नहिं ल्याऊँ भूप संग, तौ नहिं मेरोनाम ॥७॥

(और भी)

यदि महाराज उदयन को घोषवती वीणा को और उस विशालाक्षी को हरण न कर लाऊँ तो मेरा नाम यौगन्धरायण नहीं ॥८॥

(कुछ सुनने का नाटक करते हुये)

कुछ आहट मालूम होती है, देखो किसका शब्द है।

विदूषक--इसी समय ? (जाकर और लौटकर)

मध्याह्न की धर्म बाधा से संतप्त होकर यात्री विश्राम करने के लिये यहाँ आ रहा है। तब क्या करना चाहिये।

रुमण्वान--इसमें चार फाटक हैं। हमलोग पृथक पृथक हो जाँय।

यौगन्धरायण--ऐसा न कहो। इस त्रिकुटी का संगठन कदापि न टूटना चाहिये परन्तु हमें ऐसा करना चाहिये जिससे वैरी का संगठन टूटे। यह कहो कि अपना अपना कार्य साधन करो।

दोनों--बहुत अच्छा--(प्रस्थान) (यौगन्धरायण अपने उसी उन्मत्तक वेश में प्रलाप करता हुआ।)

उन्मत्तक--देखो मृगान्त मूर्त्ति पर राहु आक्रमण कर रहा है इसे छोड़ दे छोड़ दे अन्यथा तेरा मुँह फाड़कर भी इसे निकाल लाऊँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देखो यह दुष्ट अश्व कहाँ से अपना खूँटा तुड़ाकर भागा आता है चलो इस पर आरुढ़ होकर बलभक्षण करें। अरे इन राजनन्दिनियों का आगमन कहाँ से हुआ ? ये व्यर्थ के लिये मुझे क्यों दण्ड दे रही हैं ? अरी मुझे न पीटो तुम कहती क्या हो हमें भी नृत्य देखने दो। अरी राजनन्दिनियों तुम भी नृत्य देख लो। मुझे पीटो नहीं, नहीं तो कहीं मैं भी मार बैठूँगा।

तृतीय अंक समाप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थ अंक

(भट का प्रवेश)

भट—राजनन्दिनी वासवदत्ता को जलविहार कराने वाली करणी का यन्ता गात्रसेवक बहुत देर से कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। (पुकार कर) क्यों जो, पुष्प दन्तक ! क्या गात्रसेवक भी कहीं तुम्हें दिखाई पड़ा है ? (नेपथ्य में सुनने का नाट्य करते हुए) क्या कहते हो ? गात्रसेवक अभी कंडिल सुंडी के गृह में बैठा वारुणीसेवन कर रहा है। अच्छा, यही तो कलारी का घर है उसे पुकार लूँ। गात्रसेवक अरे गात्रसेवक !

(नेपथ्य में)

ऐसे अवसर पर मुझे कौन राज-मार्ग पर मेरा नाम ले-लेकर पुकार रहा है।

भट—देखो यही तो गात्रसेवक है जो वारुणीसेवन से उन्मत्त होने के कारण कभी हँसता, कभी पीता और कभी लुढ़कता हुआ इसी ओर आ रहा है। इसके नेत्र जपा सुमनों के सदृश अरुण हो रहे हैं इसके सामने जाना उचित नहीं (ओट में खड़े होकर)

(गात्रसेवक पूर्वकथित मुद्रा से आ रहा है)

गात्रसेवक—सड़क पर कौन मेरा नाम ले-लेकर पुकार रहा है सम्भव है कि मधुशाला से निकलते समय मेरे स्वश्रुदेव ने मुझे देख लिया हो और इसीलिये क्रोधित हो रहे हों। उस समय एक तो मेरे हाथ में पीयूष कल्प वारुणी-पात्र था और लोन-मिर्च डालकर भुना हुआ चरपरा मांस खंड मेरे मुख में था और क्या कहें यदि पुत्रवधू भी इसका रसास्वादन करे तो वह तो उस पर मुग्ध ही हो जाय परन्तु अब इतना ही कि सास बिना दण्ड दिये न मानेगी।

वारुणी प्रमत्त मनुष्य धन्य है, वारुणी से अनुलिप्त लोग भी धन्य हैं, सुरा में शराबोर भी धन्य है, यहाँ तक कि सुरा सेवन से प्राण परित्याग करने वाले भी धन्य हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुरा भक्त जन, धन्य हैं, सुरा लिप्त जन धन्य।
सुरा अन्हाये धन्य हैं, सुरा पान मृत धन्य॥

जो मूर्ख पुत्र-कलत्र आदिकों के नित्य प्रति के झक्झक् में पड़कर अपना जीवन सत्यानाश करता है और वारुणीसेवन नहीं करता वह बड़ा मन्दभागी है। मेरे विचार के अनुसार उसे बैकुण्ठ में जाकर भी नर्क का दृश्य देखना पड़ेगा।

भट—(आगे बढ़कर) अहो गात्रसेवक ! मुझे तुम्हारी खोज करते-करते न जाने कितनी देर हो गई। महाराज महाचंडसेन की दुहिता वासवदत्ता को जलविहार कराने के लिये जाने वाली वह भद्रवती नाम की करिणुका कहाँ है ? तुम तो उन्मत्त होने के कारण पाद-प्रहार सह रहे हो।

गात्रसेवक—हथिनी तैयार की जा रही है। वह भी पहिले से प्रमत्त थी अब उसकी देख-रेख करने वाला महावत भी मत्त हो गया है, हम तुम और सारा संसार भी मत्त हो रहा है।

भट—संसार की चरचा न चलाओ। तुम्हें चाहिये था तुम पहिले करिणुका के पकड़े जाने का उपाय बतलाते परन्तु इसके विपरीत में तुम असम्बद्ध प्रलाप कर रहे हो।

गात्रसेवक—मैं तो स्वच्छन्द विहार करूँगा। यहीं भोजन करूँगा, यहीं पान करूँगा और यहीं घूमूँगा।

भट—अनर्गल प्रलाप का यहीं से अन्त करो। भद्रवती करणी को अभी लाकर उपस्थित करो।

गात्रसेवक—मैं भद्रवती को कैसे लाऊँ ? क्योंकि मैंने उसका अँकुश गिरवी रखकर वारुणी सेवन किया है।

भट—जो हुआ सो हुआ अंकुश की चिन्ता न करो उसे ही जाकर तैयार कर लाओ क्योंकि वह स्वभाव से ही बड़ी सीधी है।

गात्रसेवक—भद्रवती कैसे लाई जाय उसकी विशिख माला को भी मैंने गिरवी रख दिया है।

भट—पुष्पवन्या होने के कारण उसे विशिखमाला की कोई जरूरत नहीं। उसी को ले आओ।

गात्रसेवक—अरे भद्रवती को मैं कैसे चला सकूँगा ? उसका घंटा भी तो गिरवी रख दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भट—अरे ! राजनन्दिनी को तो जलविहार के लिये जाना है, घंटा का इससे कौन सा सम्बन्ध है ?

गात्रसेवक—अरे भाई क्या कहें ? उसकी जीन तक गिरवी रख दी गई है। भद्रवती को कैसे लाऊँ ?

भट—यदि वह विभूषित नहीं हो सकती तो उसे नंगी पीठ ले आओ।

गात्रसेवक—कहाँ से लाऊँ ? कैसे लाऊँ ?

भट—क्यों हाय-हाय लगा रक्खी है ?

गात्रसेवक—मैंने हाय-हाय लगाई है ?

भट—मैंने ! क्या कह कर चुप हो गये ?

गात्रसेवक—हाय भद्र—(वती)

भट—फिर उसी प्रकार अर्द्ध कथित वाक्य बोलने लगे ?

गात्रसेवक—हाय भद्रवती !

भट—फिर भद्रवती क्यों पुकारता है ?

गात्रसेवक—अरे ! वह भी तो गिरवी रख दी गई।

भट—(सोच में) आश्चर्य है ! परन्तु मैं तो तुझे दोषी नहीं ठहराता इसमें उस सूँड़ी का ही दोष है। उसकी धृष्टता कि वह राज-काय सामान को गिरो रखकर राजसेवकों को मदिरा पिलाता है।

गात्रसेवक—मैंने पहिले ही उससे निवेदन किया था कि तू मेरा मूल ही नष्ट कर दे।

भट—अरे यह घोर शब्द कैसा सुनाई पड़ता है ?

गात्रसेवक—अहा ! समझ गया, भद्रवती सुंडी का विध्वंस करके ही आगे बढ़ रही है।

भट—क्या कहते हो ? (नेपथ्य की ओर देखकर) यह तो महा-राज उदयन वासवदत्ता को हरण किये हुये लिये जा रहे हैं।

गात्रसेवक—(आनन्द पूर्वक) तुम्हारे मार्ग में कल्याण हो। कोई विघ्न बाधा उपस्थित न होने पावे।

भट—यथेष्ट वारुणी सेवन करके और उन्मत्त हो ले।

गात्रसेवक—उन्मत्त कैसा होता है ? और उन्माद कैसा होता है ? हम लोग तो मन्त्रिवर यौगन्धरायण के द्वारा गुप्त रूप से स्थाना-नुसार नियुक्त कर दिये गये थे। हम लोग वास्तव में कौशाम्बी के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्तचर हैं। मैं आत्मीय जनों को इस घटना का समाचार पहुँचाता हूँ। देखो बन्धनमुक्त भुजंगों के सदृश्य कौशाम्बी सैनिक इधर आ रहे हैं। मित्रो सुनो।

ढक्यौ दर्भ सौं और मंत्र सौं पंकज जोई।
जल परिपूरन नव शराब पावै नहि सोई॥
परै नरक मैं जाय कबौं हूँ चैन न पावै।
जो निज प्रभुहित समर माँहि नहि प्रान गँवावै॥२॥

जो वीर अपने स्वामी के लिये युद्ध नहीं करता वह पवित्र जल से युक्त एवं दर्भांकुरों से आच्छादित जल पूर्ण पात्र नहीं पाता, प्रत्युत वह नर्क को जाता है॥२॥

मंत्रिवर यौगन्धरायण कहाँ हैं? अहा हा! यह तो सामने ही आ रहे हैं।

हाथ में तीक्ष्ण स्वच्छ करवाल लिये हुये, उन्मत्त का सा वेष छोड़े हुये, बांये हाथ में हेम मंडित दिव्य ढाल लिये हुये, शिर पर सुन्दर पगड़ी बाँधे हुये, यौगन्धरायण ऐसी शोभा देते हैं जैसे विद्युच्छटा के सहित मेघा वृत मन्दाभ चन्द्रमा॥३॥

निहित विमल करवाल हाथ उन्मत वपुधारी।
कनक वलित वरढाल आपु बायें कर धारी।
पहिरे केतिक वसन, पागनिज शिर पै धारत॥
लसत तड़ितयुत जलद सरिस जो विधुहि निकारत॥३॥

अब तो घोर संग्राम होने लगा।

गजवाहकों के सहित हाथियों का, सहायक योधाओं का एवं एक अक्षोहिणी सेना का मुहूर्त्त मात्र में संहार करके नागेन्द्र-दन्त मुशल से बाहु पर चोट खाने से निरस्त्र होकर भी एक पग पीछे नहीं हटते॥४॥

मांरि कै वारन वृन्द अनेकनि,
भीर सवारनि हू की गिराय कै।
त्यौं अपने ही महाबल सौं,
तिन छौहनी सेना दई विचलाय कै।
मूसल सौ वर बारन दन्त पै,
मारी जवै करवाल रिसाय कै।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आयुध छूटि गयो कर को,
अरु वैरिन के वश मैं परयौ जाय कै ।।४।।

अरे ! यह क्या हुआ ? आज यौगन्धरायण बन्दी बना लिये गये हम भी उनके लिये अपने प्राण क्यों न दे दें ? (प्रस्थान)

भट—अरे यह तो अपूर्व दृश्य है। सारी नगरी इस समय कौशाम्बी हो रही है। अभी मंत्री से जाकर कहता हूँ। (प्रस्थान)

(इति प्रवेशक)

(दो सामान्य सैनिकों का प्रवेश)

दोनों—अरे भाई चलो हटो।

प्रथम—पुकारते पुकारते गला पड़ गया परन्तु इस अपार जन समुद्र का कहीं अन्त नहीं दीख पड़ता और न इसका घोर रव हो शान्त होता है।

द्वितीय—आह ! राजनन्दिनी वासवदत्ता के अपहरण किये जाने का समाचार चारों ओर फैल गया इससे जनता के क्षुब्ध होने के कारण मेरी पुकार भी किसी को सुनाई नही देती।

(नेपथ्य में कान देकर)

हटो हटो, क्यों कह रहे हो ? आर्य यौगन्धरायण तो पकड़ लिये गये अब यह कैसे बन्धन मुक्त होंगे (सुनने का नाट्य करते हुये) कैसे पकड़े गये इसका हाल सुनो। मंत्रिवर यौगन्धरायण ने द्वितीय अक्षौहणी सेना के आक्रमण का निराकरण अपने निष्कृप कृपाण को धारा के बल से किया परन्तु ज्यों ही वे विजय सुन्दर नामक हाथी के दाँतों पर अपना खड्ग प्रहार किया त्यों ही वह टूट गई। उनके निरस्त्र होते ही शत्रुओं ने उन्हें बन्दी बनाया। उनके वीरत्व में कोई संदेह नहीं।

प्रथम—अरे बढ़ बढ़ कर बातें क्यों मारते हो ? देख लो आज उज्जयिनी कौशाम्बी हो रही है।

दोनों—आर्य ! इधर उतर आइये। (वाहुवद्ध यौगन्धरायण उतर आता है।)

यौगन्धरायण—यह लो मैं उतर आया।

शत्रु के हाथों से वत्सराज को छुटाकर, अपने ही अस्त्र के दोष से पकड़ा जाकर, तथा स्वामी का दुःख दूर करके अब हार कर राज कुल में सुख से प्रवेश करता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यथार्थ बात है। कलत्र के बिना आरण्यवासी होकर रहना भी आनन्दप्रद है। अभिलाष-पूर्ति के अनन्तर अतिथि बनना भी सुखप्रद है। तथा पर्याप्त धर्म संचय करने के अनन्तर यदि मनुष्य मर भी जाय तो उसका परिताप न होना चाहिये।

वैर पराभव औ भय भावनि।
जानि बराबरि ही तें निकार्यौं।
नीति विनै अरु बानिन सौं,
जेहि भाँति बन्यौ निज काज सवार्यौं।
छीन्यौ बिजै अरि वृन्दनि सौं,
निज लोगनि के अजसै हठि टार्यौं।
गौरव, भूपनि, औ जय कौ,
तिमि पाय अनद खरो उर धार्यौं ॥७॥

वैर, भय एवं अनादर को समान रूप से छोड़कर नीति, विनय एवं घाणो से अपना काम निकाल कर शत्रु की विजय लक्ष्मी छीनकर एवं मित्रों के अयश को छुड़ाकर मैंने महाराज उदयन की जय की, एवं महान् पदवी को प्राप्त किया ॥६॥

दोनों—चलो भागो हटो।

यौगन्धरायण—मुझे देखने वालों को मत हटाओ।

राजभक्ति के कारण विपत्ति में पड़ने वाले मुझ यौगन्धरायण को बलो राज पुरुष लोग भली भाँति देख लें, जो लोग अपने चित से भी मंत्री पद की कामना करते हैं, जिनका अभिलाषा चाहे स्थिर हो अथवा नष्ट हो जावे ॥७॥

स्वामि कौ वेगि बचावन को जहाँ,
आय पर्यौ दुख की सरि धारैं।
या विधि मो कहँ आज विपन्न,
प्रदोत महीप के वोर निहारैं॥
मंत्रिन के वनिबे के विचारनि,
जे अनुराग भरे उर धारैं।
ते अभिलाष दृढ़ावैं हिये,
अरु चाहैं निरास ह्वै ताहि निकारैं ॥७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दोनों—चलो चलो क्या तुम लोगों ने अब तक महामात्य यौगन्धरायण के दर्शन नहीं किये ?

यौगन्धरायण—इन्होंने देखा होगा परन्तु उन्मत्त के रूप में देखा होगा न कि सैनिक के रूप में। उन्मत्त के वेष में गलियों में दौड़ने का वह रूप तो पहिले भी देखा था, परन्तु कार्य्य कलाप आज देखने में आये ॥८॥

उन्मत्तक वेषहि गलिन, धावत देख्यौ जाहि।
कियौ अपूरब काज जिन, क्यों न विलोकों ताहि ?

(सैनिक का प्रवेश)

सैनिक—(सव्यंग) महानुभाव आपके लिये प्रिय समाचार लाया हूँ। महाराज उदयन फिर बन्दी बना लिये गये।

यौगन्धरायण—(साक्षेप) ऐसा होना नितान्त असम्भव है। बहुत समय से शत्रुपुर में कारागार से छूटकर तथा भद्रवती के द्वारा विन्ध्य बनों को पार करके निमिष मात्र में योजनों तक जाने वाला भी क्या पकड़ा जा सकता है ?

तुमने वत्सराज के बन्दी बनाये जाने का समाचार कहाँ सुना ?

सैनिक—स्वयं नीलगिर ही ने उन्हें छोड़कर पकड़ लिया है।

यौगन्धरायण—इसमें कोई संदेह नहीं कि नीलगिर भी भग सकता है।

[यन्ता के संचालन कौशल पर ही वारणेन्द्र का वेग निर्भर है। महाराज उदयन के द्वारा संचालित किये जाने पर उसे कौन पकड़ सकता है ?]

यन्ता के सासनहि ते, गतिहि गहत गजराज।
उदयन बिनु नीलागिरिहिं प्रेरि सकै को आज ॥६॥

सैनिक—आर्य—अमात्य वरों ने कहला भेजा है कि आप यहीं अस्त्रागार में ठहरें। यह स्थान चारों ओर से पर्याप्त सुरक्षित है।

यौगन्धरायण—तुम्हारी वचन रचना सुनकर मुझे हँसी आती है। वत्सराज रूपी अग्नि के पकड़ लाये जाने पर जब कि सब तरह से रक्षा करने के योग्य था तब तो सभी सोते रहे, जब रत्न ही लाया गया तो उसके पात्र की रक्षा में क्या रखा है ?

प्रथम सैनिक—यही आयुधागार है। आर्य इधर घूमकर आवें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरा सैनिक--(आता हुआ) अमात्यप्रर ने आज्ञा दी है कि शृङ्खलायें उतार ली जाँय।

यौगन्धरायण--अच्छा मेरे ऊपर से बोझ उतार लो। भरतरोहक निश्चय ही मुझसे मिलने आवेंगे। मैं भी उनके दर्शन करना चाहता हूँ।

मेरा प्रलाप सुनकर उनके मर्म-स्थल पर आघात हुआ होगा। जिस प्रकार उन्होंने वत्सराज को वंचित किया था वैसा ही हमने प्रद्योत को वंचित किया। यह तो आर्योपदिष्ट प्राचीन नीति प्रणाली है। इसी का आश्रय ग्रहण करने पर वह वंचित हुये। वह इस समय द्वन्द्व युद्ध में परास्त किये हुये नतानन मल्ल के समान हैं। मैं निश्चय ही उनसे मिलना चाहता हूँ।

क्रोध सौं कलित सुनि तीखे मम बैननि कौ,
जाने निज होतल अपार बिथा पाई है।
त्यौं ही कूट नीति के अरम्भहि में वंचित ह्वै,
मौसम सुबुद्धि कौ सक्यौ न उपजाई है।
कुंठित भई है शास्त्र चिन्तन विमल बुद्धि,
मोसो प्रतियोगिता मैं धोखो गयो खाई है।
देखौ चहौं ताकहं अखारे हारौ मल्ल सम,
बैठ्यौ मन मारि औति आनन नवाई है ॥१२॥

(भरत रोहक का प्रवेश)

भरतरोहक--आर्य यौगन्धरायण कहाँ हैं ?

अपने महाराज के लिये स्वयं अपने को आपत्ति में डालने वाले, यथासाध्य प्रयास करने वाले, मर्यादा से बाहर प्रयत्नों को काम में लाने वाले, कैतव नीति के प्रत्यक्ष अवतार, क्रोधित भुजंगम के समान बन्दी बनाये जाने पर भी उन्नत ललाट महानुभाव से मैं किस प्रकार सम्भाषण करूँगा ? ॥१३॥

सैनिक--आर्य अस्त्रागार में बैठे हुये यौगन्धरायण आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

नीलागज के ब्याज सौं, जेहि बंच्यौं करि चाह।
लै बदलौ तेहि बैर कौ, देखत मेरी राह ॥१४॥

नीलागज के व्याज से मन्त्रित्व में वंचित होकर उस वैर का प्रत्यादेश करने के लिये इस समय मेरी प्रतीक्षा कर रहा है ॥१४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सैनिक—यहाँ मन्त्रिवर बैठे हुये हैं।

भरतरोहक—(निकट जाकर) आप ही का नाम यौगन्धरायण है ?

सैनिक—(स्वगत) अहा ! कैसी गम्भीर वाणी है। वर्णमात्र के उच्चारण से सारा गृह प्रतिध्वनित हो उठा।

भरतरोहक—(बैठकर) अहा यौगन्धरायण ! इन शरीर रहित वर्णों को तो मैंने अवश्य ही सुन रक्खा था परन्तु सौभाग्यवश आपका प्रत्यक्ष दर्शन आज ही हुआ।

यौगन्धरायण—यदि मेरा दर्शन आपको हुआ तो आप भली भाँति मुझे देखलें।

क्रियौं वीर लौं काज मैं, रुधिर सनौ सब गात,
गुरुघातिहि हनि सान्त ह्वै, द्रौनी सरिस लखात ॥१६॥

रक्तक्लिन्नगात्र एवं बन्दी हुये, गुरु घाती को मार कर निश्चित बैठे हुये द्रोणी के समान मुझे देखो ॥१६॥

भरतरोहक—अच्छा उस वन्दनीय कृत्रिम वारणेन्द्र के सम्बन्ध में आप दोषोत्घाटन करना चाहते हैं ?

यौगन्धरायण—तो क्या आपका वह कार्य नीति संगत भी था ?

साल अरु मल्लिक सघन तरु ओट तुम,
गजहि बनायकै छल्यौ है मम स्वामी कौ।
बाहु उपधान करि सोयौ है धरा पै वह,
बाँधि इमि विवस कियौ है भूप नामी कौ।
घोषवती वीना व्याज साजि छल कीन्ह्यौं बस,
वारन वसीकरन सु विद्यापारगामी कौ।
जैसौं आपु मारग दिखायौ हुतो मोको, पग।
ताही पर दीन्ह्यौं छमा कीजौ अनुगामी कौ ॥१६॥

मल्लिका और साल वृक्ष की ओट में कृत्रिम गज रचना के व्याज से तुम लोगों ने हमारे स्वामी को ऐसे वंचित किया कि उन्हें हाथ का तकिया लगाकर पृथ्वी पर सोने के लिये विवश होना पड़ा। तुम जानते थे कि हमारे महाराज वीणा बजाकर वारण को वश में कर लेते हैं, इसलिये उन्हें वंचित किया। संक्षेपतः प्रवञ्चना का पथ जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुमने मेरे लिये पहिले से प्रशस्त कर रक्खा था यदि मैंने भी उस पर पदार्पण किया तो इसमें मेरा कौन सा अपराध है ? ।।१६।।

भरतरोहक—अच्छा यौगन्धरायण तुम्हीं देख लो कि पावक को साक्षी बनाकर उदयन ने प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता को शिष्या के रूप में ग्रहण किया था परन्तु उसे बिना दान पाये हुये चोरों के समान अपहरण करके ले भगे। क्या यह निन्दित कार्य नहीं है ?

यौगन्धरायण—अरे ऐसी वचन रचना आपके मुख से अच्छी नहीं लगती। महाराज उदयन का तो यह अवश्य पाणिग्रहण ही था।

भरत बंश मैं जन्म लै, ह्वै पुनि बत्स नरेस।
बिना बनाये दार तेहि, किमि करते उपदेस ।।१७।।

भरतवंश में उत्पन्न हुए, और प्रसिद्ध वत्सराज महल में फिर भला बिना तुल्य गुणा स्त्री को पाये हुये कैसे उपदेश करते ? ।।१७।।

भरतरोहक—और भी सुनो। महाराज प्रद्योत ने उनकी प्रतिष्ठा प्रदर्शित करते हुये उन्हें बन्धन-मुक्त कर दिया, क्या वह सत्कार यथेष्ट न था ?

यौगन्धरायण—नहीं आप ऐसा न सोचें।

नीलागिरि इसका कहना मानेगा, क्योंकि वह अपने सिखाने वालों के ही वचन मानता है यही विचार कर अपने शरीर की तथा अपने मित्रों की रक्षा के लिये और यश देने के लिये इन्हें छोड़ दिया था ।।१८।।

भरतरोहक—यदि यही बात है कि नीलागिर को वसुवर्त्ती बनाने के लिये ही उदयन को बन्धन मुक्त किया था तो फिर कार्य सिद्धि के अनन्तर उन्हें क्यों पूर्ववत् बन्दी न बना लिया ?

यौगन्धरायण—उन्होंने प्रजा के साथ कितना उपकार किया था। इसलिये उनके साथ यदि इस प्रकार का दुर्व्यवहार किया जाता तो वह प्रजा को सह्य न होता इसीलिये उन्हें फिर बन्दी न बनाया गया।

भरतरोहक—राजनीति विशारद होते हुये भी आप इस प्रकार कहते हैं। क्या आप नहीं जानते कि शास्त्र ने बन्दी वैरी के लिये किस प्रकार के व्यवहार का अनुशासन दे रक्खा है।

यौगन्धरायण—शास्त्र ने मृत्युदंड की आज्ञा दे रक्खी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भरतरोहक—यदि हमें मृत्यु दंड देना होता तो इस प्रकार उन्हें प्राण दान देकर हम उनका सत्कार क्यों करते ?

यौगन्धरायण—क्यों, केवल इसी विचार से कि उदयन के निधन होने पर महाराज प्रद्योत की भी रक्षा असम्भव हो जायेगी ?

भरतरोहक—अच्छा! हमारे महाराज ने इसकी सम्भावना पर भी विचार कर लिया था।

यौगन्धरायण—इसमें कौन संदेह है ?

करि निज वस प्रद्योत कहँ, उदयन दियो बचाय।
बिना चढ़े गज पै सकै, कोऊ धुजा गिराय ॥१६॥

वत्सराज उदयन ने चंड प्रद्योत को अपनी मुट्ठी में करके भी मुक्त कर दिया। इसका प्रमाण यह है कि जब तक कि मनुष्य हाथी की पीठ पर न पहुँचे तब तक उस पर रक्खे हुये झण्डे को कोई कैसे हस्तगत कर सकता है ॥१६॥

भरतरोहक—अच्छा यह तो बतलाओ आप तो महाराज चंड महासेन के शत्रु हैं तो फिर ऐसी दशा में कौशाम्बी सकुशल पहुँचने का कोई प्रयत्न कर रक्खा है ?

यौगन्धरायण—यह तो एक हास्य का प्रसंग है। आपने भली कही। जो हुआ वह देखा जो होगा उसे देखेंगे। (भविष्य के लिये चिन्तित होना व्यर्थ है) जब हमने वृक्ष का ही न्मूलन कर डाला तो एक मात्र शाखा कैसे ठहर सकती है ? ॥२०॥

खड़ौ रावरे सामुहे, शेष काज का बात।
किती देर साखा करत, जब तरु कियौ निपात ॥२०॥

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—(कान में) बात यही है।

भरतरोहक—स्पष्ट शब्दों में कहो।

कंचुकी—हाँ महाराज।

यामै है कारन किते, तुम न कीन्ह अपकार।
गुनत दोष नहि गुनिन के, लीजै यह मृङ्गार ॥२१॥

बहुत से उपयुक्त कारणों वश तुमने कोई अपकार नहीं किया, गुणियों में मैं विद्वेष नहीं रखता अतः यह पात्र ग्रहण करो ॥२१॥

यौगन्धरायण—बड़ा ही कौतूहलवर्धक विषय है कि मेरे द्वारा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जलाये हुये गृह एवं मंत्रियों के हृदय अब तक शान्त नहीं हुये तो भी दण्डधारी यौगन्धरायण की ऐसी पूजा ! अपराधी का सत्कार तो बंध ही है ।।२२।।

आजहुँ लौं नहिं गेह बुझे,
जिनमें मम वीरन आगि लगाई ।
त्यों ही अमात्यनि के हियरानि,
लही अबहूँ नहीं सीतल ताई ।।
यों सब के अपकारिहि कौ,
उपहारनि दै इमि प्रीति दृढ़ाई ।
या विधि सौं अपराधिनि के,
तुम मारिबे की नई रीति चलाई ।।
यह सहसा नृप सौंध सौं, भज्यौ कौन धौं जात ?
वाज ग्रसित कुररीनि सौं, क्रन्दन करुन सुनात ।।२३।।

(नेपथ्य में करुण क्रन्दन)

भरतरोहक—अरे देखो !

राजप्रासाद के अग्रभाग से सहसा निकलता हुआ यह कैसा करुण क्रन्दन सुनाई पड़ता है, जो श्येन पक्षी के झपटने से कुररियों की ध्वनि के समान ज्ञात होता है ? जाकर इसका अनुसंधान तो करो ।

कंचुकी—जैसी आज्ञा हो (जाकर और फिर लौटकर) दुहिता वियोग से कातर होकर महारानी राजप्रसाद के ऊपर से नीचे फाँद कर अपना प्राण परित्याग करने जा रही हैं । इसीलिये परिचारिकायें इस प्रकार करुण क्रन्दन कर रही हैं । किन्तु महाराज महासेन ने उन्हें भली-भाँति विश्वास दिलाया है कि तुम्हारी दुहिता का विवाह क्षात्र धर्मानुकूल ही हुआ है इसलिये हर्ष के स्थान पर शोक करना व्यर्थ है । इस प्रकार कहकर उन्होंने वासवदत्ता और उदयन के चित्रपट को रख कर अभिषेक पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराया । इस माँगलिक समाचार से अब

नीरज नैननि नीरभरि, प्रमुदित तरुनि समाज ।
सब मिलि साजति व्याह के, अबहीं मंगल साज ।।२४।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्त्रियाँ सहसा इस विवाह के लिए प्रहर्ष और व्याकुलता पूर्वक मङ्गलमय कुतूहल पूर्ण कार्य्य कलापों का सम्पादन कर रही हैं ॥२४॥

यौगन्धरायण—(सानन्द) अच्छा यही बात है तो हमें महाराज महासेन का सम्बन्ध स्वीकार है। मेरा भी उपहार लाओ।

कंचुकी—लीजिये महाराज लीजिये (देता है)

भरतरोहक—बन्धु यौगन्धरायण! आपका और क्या प्रिय करें ?

यौगन्धरायण—यदि महाराज महासेन वास्तव में हमसे प्रसन्न ही हैं तो इससे बढ़कर हमें और कुछ नहीं चाहिये परन्तु फिर भी भरत वाक्यानुसार

होय सान्त पर चक्र भय, रज बिनु सुरभि समाज।
एक छत्र महिपति बनै, राजसिंह महराज ॥

धेनुवृन्द धूसर रहित हो, पर चक्र भय शान्त हो, इस समग्र पृथ्वी पर हमारा राजसिंह शासन करें ॥२५॥

चतुर्थ अंक समाप्त।

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Bharatiya Vidya Mahavidyalaya
554

मुद्रक—ला प्रिन्टिङ्ग प्रेस, प्रयाग।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

DATE DUE

Class No. 822 Book No. ________

Accession No. 801

This book should be returned to the Library on the date last stamped. A fine of 0.6 nP. will be charged for each day the book is kept over time.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

१ काव्य कलानिधि ३॥)
२ भारत-गीत ≡)
३ राष्ट्रभाषा ॥)
४ मैथिली लोकगीत ४)
५ पद्मावत पूर्वार्द्ध १), १।)
६ स्त्री का हृदय १॥)
७ नवीन पद्यसंग्रह १।)
८ बिहारी-संग्रह ≡)
९ सखी कृष्णकी ॥)
१० हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ॥=)
११ ग्रामों का
१२ समाचार
१३ अकबर की
१४ रसखान
१५ देव शब्द
१६ सरल शरी
१७ प्रारम्भिक-
१८ सृष्टि की क

१ चित्ररेखा २)
२ बाल नाटक-माला ।)
३ बाल-कथा भाग २ ।=)
४ बाल विभूति ≡)
५ वीर पुत्रियाँ ।=)
६ तुलसी दर्शन ५)
७ सरल नागरिक शास्त्र ४)
८ कृषि प्रवेशिका १।)
९ विकास (नाटक) ॥=)
१० ५)

१ गोरखबानी
२ महावंश—
३ भोजपुरी लो
४ राजस्थानी
५ सामान्य भा
६ काव्यप्रकाश
७ कैलास और
भोजपुरी ग्रा
अनुराग बाँ
विचार विम
११ बाल इतिहास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मत्स्य महापुराण

अनुवादक : रामप्रताप त्रिपाठी, शास्त्री

वेदों के बाद पुराण हमारी संस्कृति के गौरव प्रतीक हैं। उनमें ऐसे रत्न छिपे हुए हैं, जिनकी उपेक्षा पाश्चात्य विद्वानों से भी करते नहीं बन पड़ी। पुराणों में वर्णित भारतीय समाज की सब से पुरानी कहानियों की महत्ता इसलिये भी अतुलनीय है कि वह मनोरंजक होने के साथ-साथ जीवनदायिनी अनुभूतियों से ओतप्रोत, सरल, आडम्बर हीन, सुरुचिपूर्ण और उपदेशप्रद हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी उपयोगिता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

मत्स्य महापुराण की प्रशंसा ऐतिहासिक विद्वानों ने भी इसलिये की है कि अन्य पुराणों की भांति इसमें किसी सम्प्रदाय विशेष की प्रशंसा और अन्य का निन्दा नहीं की गई है। और न किसी विशेष सम्प्रदाय के हाथ में पड़ कर यह प्रचार का साधन ही बना है। इसमें मूर्ति कला, चित्रा कला, राजनीति, कूटनीति, वास्तु विज्ञान, आयुर्विज्ञान, ज्योतिष आदि कला एवं वैज्ञानिक विषयों का भी सन्निवेश है। अनुवाद प्रामाणिक और प्रवाहपूर्ण हैं। साधारण पढ़े लिखे लोग भी इस से मूल ग्रन्थ का आनन्द उठा सकते हैं। पुस्तक प्रायः ८०० डबल क्राउन अठपेजी साइज में समाप्त हुई है। मूल्य २०)

जातक

[प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय खण्ड]

अनुवादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुकाबिला नहीं हो सकता। ये बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०, डिमाई साइज; सजिल्द मूल्य ७॥)
द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४, डिमाई साइज; सजिल्द मूल्य ७॥)
तृतीय खंड, पृष्ठ संख्या ४४८, डिमाई साइज; सुन्दर जिल्द मूल्य १०)